॥ श्रीहरिः ॥

विवाह पद्धति

● अथ विवाह सामग्री ●

रेणुका या पीली मिट्टी	कलावा २ गुच्छी	पूर्ण मात्र का लोटा चावलों से भरा हुआ १
छाज बिना तांत का १	दूर्बा, कुशा	प्रोक्षणी पात्र को कटोरी १
घड़ा १	आम की टहनी	प्रणीता पात्र को कटोरी १
करवा १	आम की लकड़ी के दो पटरे	कांसे की कटोरी १
नारियल १	घी कटोरे में २५० ग्राम	छाया दान को २
सराई १०	लोटा १	स्रुवा १, शंख १
दीपक १	दही १०० ग्राम	जांड़ शमी के पत्ते ५० ग्राम
आटा एक किलोग्राम	शहद ५० ग्राम	गाय का गोबर
बताशे १२५ ग्राम	दौने ढाक के १२	पान १०
चावल ५० ग्राम	केले ४ या बांस सरे ४	कन्या वर को ४ वस्त्र धोती २, दुपट्टे २
रोली २५ ग्राम	गोटा सफेद २ तनी	१०, २५ और ५० के सिक्के
दुपट्टा अन्तरपट को ●	कंद सुर्ख २ गज चंदोये को	तिल ५० ग्राम
केशर, कपूर	गंगाजल एक कटोरे में	पीली सरसों ५० ग्राम
चन्दन की गिट्टी, हुरसा	धान की खील २५० ग्राम	अंगूठी स्वर्ण की १
ऋतुफल ४	लकड़ी ढाक की २ किलोग्राम	सिन्दूर
फूल १००-१२५ ग्राम	पत्थर का टुकड़ा १	मटकैने २
धूप, रुई कच्ची	आसन ४	गाय गोदान को
हार १०, सुपारी २०	धोती अंगोछा ब्राह्मण को १	
पंचरंग		

सज्जन वृन्द ! मनु भगवान ने आठ प्रकार के विवाह लिखे हैं—

ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः॥

अर्थ—ब्राह्म १, दैव २, आर्ष ३, प्राजापत्य ४, आसुर ५, गान्धर्व ६, राक्षस ७, पिशाच ८, विवाह हैं। उपर्युक्त आठ प्रकार के विवाहों में से पहले चार विवाह ही शास्त्रकारों ने श्रेष्ठ माने हैं। और इन चारों में ब्राह्म विवाह ही सर्वश्रेष्ठ और मान्य है। ब्राह्म रीत्यनुसार ही इस पद्धति को पं० रामस्वरूप शर्मा मेरठ निवासी ने सर्व सज्जनों के हितार्थ रचकर तैयार किया है। कम पढ़े-लिखे पण्डित भी इस पुस्तक के द्वारा बहुत आसानी से विवाह कर्म सम्पन्न करा सकेंगे।

—प्रकाशक

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

रामस्वरूप मेरठ वाले की

अथ विवाह पद्धतिः

भाषा टीका विधि सहित

●●●●●●●

प्रणम्य परमात्मानं गणेशं च गजाननम्।
वर्णानां च हितार्थाय पद्धतिः क्रियते मया॥

टीका—परमात्मा और गणेश जी को प्रणाम करके वर्णों के हितार्थ विवाह पद्धति की भाषा टीका की जाती है।

(विवाह कर्म में कर्मों की संख्या)

पादत्राणविमोचनं च वरणं वाचार्चनं विष्टरं, पाद्यं विष्टरमर्घ्यमाचमनविधिर्मधु-पर्काङ्गन्यासौ तथा। गोमौड्यग्नि सुहस्तले-पनविधिश्शाखाकुशैः कण्डिका। कन्या-दानसुवस्त्र, ग्रन्थिहवनंह्यन्तरपटपरिक्रमः ॥१॥ पुनः सप्तपदीं कृत्वा वाम दक्षिणकं तथा। दक्षिणादानसंकल्पं अक्षतांश्चैव दापयेत् ॥२॥

टीका—(उपानह) अर्थात् जूते उतरवाना, (वरणं) पौंची बांधना, (वाचा) अर्थात् कन्या पिता के वचन, (अर्चन) अर्थात् मुकट का पूजन करना, (विष्टर) आसन, पैर धोवे, दूसरा विष्टर, अर्घ, आचमन, मधुपर्क, अंगन्यास, गौ संकल्प, मौड़ी, अग्नि, हाथ पीले, शाखोचार, कुशकण्डिका, कन्यादान, ४ वस्त्रदान,

गन्थि-बन्धन अर्थात् गठजोड़ा, हवन, अन्तरपट, परिक्रमा अर्थात् चार फेरे, फिर सप्तपदी अर्थात् सात वचन, बायें दाहिने होना, विवाह कराई दक्षिणा का संकल्प, देवताओं पर मन्त्र से अक्षत छोड़ना, ये उपर्युक्त कर्म क्रम से करने चाहिए।

आचार्यः पूर्वे पश्चिमाभिमुख उपविश्य वर सम्मुखम्

पण्डित पूर्व की तरफ को बैठे, पश्चिम को मुँह करके वर के सामने।

(प्रथमं वेदीं रचयित्वा)

पहले पाधा मिट्टी की दो वेदी बनावे, एक नवग्रह की उत्तर में, दूसरी हवन की दक्षिण में, फिर उन वेदियों पर पाधा चून से चौक पूरे।

(विवाहसमये कन्यापिता स्नातः)

विवाह के समय कन्या का पिता स्नान करे या हाथ पैर धोकर कुल्ला करे।

(शुचिः शुक्लाम्बरं धृत्वा)

शुद्ध धोती, दुपट्टा श्वेत वस्त्र पहिने।

(ततः कन्यापिता वेदिकामुपगच्छेत्)

कन्या का पिता मण्डप में उत्तर को मुँह करके वेदी के पास बैठ जाये।

(ततः कन्यापिता सादरं वरमाह्वयेत्)

कन्या का पिता आदर से वर को बुलावे।

(वरस्तत्रागत्य उपानहौ त्यजेत्)

वर आसन से अलग जूते निकाल दे, फिर पाधा यह मन्त्र पढ़े–

ॐ अथ वाराह्या उपानहा उपमुञ्चतेऽग्नौ हवै देवाघृतकुम्भं प्रवेशयांचक्रुस्ततोवाराहः सम्बभूव तस्माद्वाराही मेदुरो घृतादि सम्बभूव संजानते समेवैतादृशमभिसंजानते तत्पशूना-मेव तद्रसमभिसंतिष्ठते तस्माद्वाराह्या उपानहा-उपमुञ्चते ॥१॥ ॐ अथ

वाराहविहितमिति तत्र असीदित्ये व्याध हवि स इमान इह व्यास प्रदेशमात्रीं ततो मूक इत्यर्थे वाराह्या द्वितीय उपानहा उपमुञ्चते ॥२॥

(कन्यापिता वरपादौ प्रक्षालयति)

नीचे लिखे श्लोक से कन्या का पिता वर के पैर धोवे।

यत्फलं कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे।
तत्फलं पांडव श्रेष्ठ विप्राणां पादशौचने॥

(हस्तौप्रक्षाल्य)

कन्या का पिता हाथ धो डाले। मन्त्र–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा.॥

(वरः पूर्णाऽभिमुख उपविश्य)

वर पूर्व को मुँह करके आसन पर बैठे।

(वारिणा वरात्मानं सिंचेत्)

पाधा वर के ऊपर दूर्वा से गंगाजल का छींटा लगावे। मन्त्र–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यंतरः शुचिः॥ तीन बार पढ़े।

(वरस्यासनेऽक्षतान् क्षिपेत्)

नीचे लिखे श्लोक से पाधा वर के आसन पर चावल छोड़े।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

(वरः, प्राङ्मुखश्चोपविश्य)

● वर उस आसन पर पलौथी मारकर पूर्व को मुख करके बैठे।

(सर्वजनेभ्योऽक्षतान् दद्यात्

पाधा सब सज्जनों के हाथ में चावल दे।

(वरहस्ते साक्षतद्रव्यं धृत्वा)

वर के हाथ में चावल सहित दक्षिणा दे।

(स्वस्तिवाचनंपठेत्)

फिर पाधा यह श्लोक पढ़े–

ॐ मतिकरणं भयहरणं गिरजाशरणं गणेशमभिवन्दे केदारेशनिवेशम् योगीशम् सर्वजगदशम्।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
वक्रतुण्डो महाकाय कोटि सूर्य्यसमप्रभ।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।

विवाह मण्डप में बैठने की विधि

● वरस्य दक्षिणे कन्या कन्यायाम् दक्षिणे पिता।
पितश्च दक्षिणे ब्रह्मा विवाहे कर्म कारयेत्।। (वर पलौथी करके बैठे।)

हरि ॐ गणानान्त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसोमम॥ आहमजानिगर्ब्भधम् मात्वमजासिगर्ब्भधम् ॥१॥

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवा: स्वस्ति नः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२॥

ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽऔषधीषु पयो दिव्व्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः संतु मह्यम् ॥३॥

ॐ विष्णोरराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥४॥

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवता आदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥५॥

ॐ द्यौः शांतिरन्तरिक्ष ꣳ शांतिः पृथिवी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांतिर्व्वनस्पतयः शांतिर्व्विश्वेदेवाः शांतिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व

ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शांतिरेधि ॥६॥ ॐ शांतिः शांतिः सुशांतिर्भवतु।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसव: ॥७॥

ॐ एतन्ते देव सवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिन्तेन मामव ॥८॥

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषता माज्ज्यस्य बृहस्पति-र्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्ठं यज्ञ ॐ समिमन्दधातु। विश्वेदेवा सऽइहमादयन्तामोम् ३ प्रतिष्ठः। एष वै प्रतिष्ठानाम् यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेनयजन्ते सर्व्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ओ३म् ॥९॥

सर्व सज्जन जल चावल गणेश जी पर छोड़ दें।

(कन्यापिता प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात्)

कन्या का पिता जल, चावल, पैसा लेकर संकल्प करे।

ॐ तत्सद् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्यो नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्निद्वितीय प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरत-खण्डे आर्य्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे

पुण्यक्षेत्रे वेदोक्तफलप्राप्तिकामनासिद्ध्यर्थं वर्तमानसंवत्सरे अमुकायने भास्करे अमुक-मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुक करण नक्षत्रयोगयुक्तायाम् अमुक-गोत्रोऽहम् ऽमुकशर्म्माहं• श्रुतिस्मृति पुराणो-क्तफलप्राप्त्यर्थं महापापशमनपूर्वक श्रीयज्ञ-पुरुष नारायणप्रीत्यर्थं प्राजापत्यविवाह-विधिना कन्यादानकर्मण्यादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थ गणपत्यादीनां देवानामावाहनं पूजनं च करिष्ये।

(कन्या पिता गणेशादीनां पूजनं कुर्यात्)

कन्या का पिता गणेश आदि देवों का पूजन करे।

आवाहनम्, आसनम्, पाद्यम्, अर्घ्यम्, आचमनीयम्, स्नानम्, वस्त्रम्, यज्ञोपवीतम्, गंधम्, अक्षतम्, पुष्पम्, धूपं, दीपं, नैवेद्यम्, पुनराचमनीयम्, ताम्बूलम्, पूगीफलम् दक्षिणाञ्च समर्पयामि नमो नमः।।

आवाहन और पूजन कर ये सब गणेशजी पर चढावे और हाथ जोड़ कर आगे लिखे मंत्र से प्रार्थना करे–

• ब्राह्मण के यहां शर्म्माहं, क्षत्रिय के यहां वर्म्माहं, वैश्य के यहां गुप्तोऽहं, शूद्र के यहां दासोऽहं इस प्रकार उच्चारण करें।

ॐ नमोगणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्चवो नमो। नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिब्भ्यश्चवो नमो। नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सपतिब्भ्यश्चवो नमो। नमो विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेब्भ्यश्च वो नमो नमः ॥१॥

गजाननं भूतगणादि सेवितं, कपित्थजम्बूफल चारु-भक्षणम्। उमासुतं शोक-विनाशकारकं, नमामि विघ्नेश्वरपाद-पंकजम् ॥२॥

(ब्रह्माणं आवाहनम्)

कन्या का पिता चावल लेकर ब्रह्मा का आवाहन करे-

ॐ ब्रह्माणं शिरसा नित्यमष्टनेत्रम् चतुर्मुखम्। गायत्रीसहितं देवं ब्रह्माणं आवाहयाम्यहम् ॥३॥

(पूजनम्) पूजन कर सब सामग्री (चढ़ावे, (प्रार्थना) हाथ जोड़े-

ॐ ब्रह्मयज्ज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरचोव्वेनऽआवः। सुबुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य-विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः ॥४॥

(विष्णोरावाहनम्)

नीचे लिखे मन्त्र से विष्णु भगवान का आवाहन करे-

केशवं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम्।
रुक्मिणीसहितं देवं विष्णुमावाहयाम्य-
हम् ॥५॥

(पूजनम्) पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे, (प्रार्थना) हाथ जोड़े-

ॐ विष्णोरराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो
विष्णो स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि
व्विष्णवे त्वा ॥६॥

(शिवस्यावाहनम्)

नीचे लिखे मंत्र से शिवजी का आवाहन करे-

शिवं शंकरमीशानं द्वादशार्द्धं त्रिलोचनम्।
उमयासहितं देवं शिवमावाहयाम्यहम् ॥७॥

(पूजनम्) पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे, (प्रार्थना) हाथ जोड़े-

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः
शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च
शिवतराय च ॥८॥

(लक्ष्म्या आवाहनम्)

दोनों हाथ पसार कर लक्ष्मीजी का आवाहन करे-

शरीरे क्षीरसागरसम्भूतां विष्णुमाश्रिताम्।
यजमानहितार्थाय लक्ष्मीमावाहयाम्य-
हम् ॥९॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े-

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे
पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्नि-

षाणामुम्मऽइषाण, सर्व्वलोकम्मऽइ-
षाण ॥१०॥

(वरुणाय नमः)

वरुण का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े-

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्य स्क-
म्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋत सदन्यसि
व्वरुणस्यऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋत-
सदनमासीद् ॥११॥

(ओंकाराय नमः)

ओंकार का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे, फिर हाथ जोड़े-

ओंकार विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति
योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो
नमः ॥१२॥

(सूर्य्याय नमः)

नीचे लिखे मंत्र से सूर्य का पूजन करे, फिर हाथ जोड़े-

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेश-
यन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सवितारथे-
नादेवो याति भुवनानि पश्यन्। इति सूर्य्याय
नमः ॥१३॥

(चन्द्रमसे नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से चन्द्रमा का पूजन करे, फिर हाथ जोड़े-

ॐ इमन्देवा ऽअसपत्न ꣳ सुबुद्धवम्महते
क्षत्त्रायमहते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्या

येन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रम-स्यैविश ऽएषवोमीराजा सोमो ऽस्माकम्ब्रा-ह्मणाना ᳪ राजा। इति चन्द्राय नमः ॥१४॥

(भौमाय नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से मंगल का पूजन करे, फिर हाथ जोड़े–

ॐ अग्निमूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपा ᳪ रेता ᳪ सिजिन्वति। इति भौमाय नमः ॥१५॥

(बुधाय नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से बुध का पूजन करे, फिर हाथ जोड़े–

ॐ उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमि-ष्टापूर्ते स ᳪ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत। इति बुधाय नमः ॥१६॥

(बृहस्पतये नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से बृहस्पति का पूजन करे, फिर हाथ जोडे–

ॐ बृहस्पते ऽतियदर्य्यो ऽअर्हाद्द्युमद्वि-भाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वसऽऋत-प्रजा तदस्मासुद्रविणन्धेहिचित्रम्। इति बृह-स्पतये नमः ॥१७॥

(शुक्राय नमः)

आगे लिखे मन्त्र से शुक्र का पूजन करे, फिर हाथ जोड़े–

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसम्ब्रह्मणाव्यपिवत्-क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः। ऋतेनसत्यमिन्द्रि-यंव्विपान छं शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिद-म्पयोऽमृतम्मधु। इति शुक्राय नमः ॥१८॥

(शनिश्चराय नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से शनिश्चर का पूजन करे, फिर हाथ जोड़े-

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः ॥१९॥

(राहवे नमः)

आगे लिखे मन्त्र से राहु का पूजन करे, फिर हाथ जोड़े-

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतो सदावृधः सखा। कया शचिष्ठयावृता ॥२०॥

(केतवे नमः)

नीचे लिखे मंत्र से केतु का पूजन करे, फिर हाथ जोड़े-

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्य्या अपे-शसे। समुषद्भिरजायथा ॥२१॥

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुश्शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनिराहु-केतवः सर्वेग्रहाः शांतिकरा भवन्तु। इति नवग्रह पूजा ॥२२॥

(षोडशमातृकेभ्यो नमः)

नीचे लिखे मन्त्र से षोडशमातृका का पूजन करे, फिर हाथ जोड़े-

ॐ गौरी १ पद्मा २ शची ३ मेधा ४ सावित्री ५ विजया ६ जया ७। देवसेना ८ स्वधा ९ स्वाहा १० मातरो ११ लोकमातरः १२॥ हृष्टिः १३ पुष्टि १४ स्तथातुष्टि १५ स्तथात्मकुलदेवता १६। आदौ विनायकं पूज्यो अंतेच कुलमातरः॥

(सर्पेभ्यो नमः)

आगे लिखे मंत्र से शेषनाग का पूजन करे, फिर हाथ जोड़े-

ॐ नमोस्तुसर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यो सर्प्पेभ्यो नमः॥ वासुक्याद्यष्टकुलनागेभ्यो नमः॥

(कन्यापिता ब्राह्मणादीनां तिलकं कुर्यात्)

नीचे लिखे मन्त्र से कन्या का पिता चार ब्राह्मणों का तिलक करे-

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मण हिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

नीचे लिखे मन्त्र से पौंहची बाँधे-

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

(आचार्योऽपि कन्यापित्रे रक्षाबन्धनं तिलकं च कुर्यात्)

नीचे लिखें मन्त्र से पण्डित कन्या के पिता के पौंहची बाँधे-

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेनाहं प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥

फिर पण्डित नीचे लिखे मंत्र से कन्या के पिता के तिलक करे-

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद-गणाः। तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ-सिद्धये॥

(वरोऽपि प्रतिज्ञा संकल्पं कुर्यात्)

जल, चावल, दक्षिणा लेकर वर भी प्रतिज्ञा संकल्प करे-

ओं अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुक-वासरे अमुकराशिस्थिते भास्करे अमुकगो-त्रोहममुक शर्म्माहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त धर्मकामार्थ सिद्ध्यर्थ मम विवाहसाङ्गता-फलसिद्ध्यर्थं श्रीयज्ञपुरुषनारायणप्रीत्यर्थं आदौ गणेशादीनां सर्वेषां देवानां आह्वाहनं पूजनञ्चाहं करिष्ये॥

(वरोऽपि गणेशादिपूजनं कुर्यात्)

वर भी गणेशजी आदि सब देवताओं का पूजन करे, जिस प्रकार कन्या के पिता ने किया है।

(वरो ब्रह्माचार्यादीनां वरणं कुर्यात्)

फिर वर आगे लिखे मन्त्रों से चार ब्राह्मणों का तिलक करे और पौंहची बांधे, जिस प्रकार कन्या के पिता ने किया है।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय. इस मन्त्र से तिलक करे।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति. ।। इस मन्त्र से पौंहची बांधे।

(आचार्योऽपि वरस्य रक्षाबन्धन तिलकं कुर्यात्)

पण्डित वर के भी पौंहची बांधे और तिलक करे। मन्त्रः

येन बद्धो बली राजा.।। आदित्यावसवो रुद्रा.।।

(चतुर्थ उपग्रहं कृत्वा)

फिर पाधा चार पवित्री कुशा की, या कलावे की बनावे। पहले दो पवित्री एक सराई में धरे, फिर उनकी नीचे लिखे मन्त्र से कन्या के पिता से प्रतिष्ठा करावे।

ॐ एतन्ते देव सवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्ब्बृहस्पतये ब्ब्रह्मणे। तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिन्तेनमामव।।

(पूजनं कुर्यात्)

फिर पूजन करे। इस मन्त्र से–

ॐ यम्ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये। विश्वोद्गते कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय।।

(कर्मकर्त्ता कन्यापित्रे एकं सव्यहस्ते उपग्रहं दद्यात्)

पाधा सराई में से एक पवित्री उठाकर कन्या के पिता के सीधे हाथ की कनकी अंगुली के पास की अंगुली में पहरावे इस मन्त्र से–

ॐ ब्रह्मणो ब्रह्माणी पत्नी लक्ष्मीसहितो जनार्दनः। उमया सहितः शंभुः प्रथमोपग्रह-मावाहयाम्यहम्।।

(द्वितीयं वामहस्ते उपग्रहं दद्यात्)

दूसरी पवित्री बायें हाथ की कनकी अंगुली के पास की अंगुली में पहरावे। इस मन्त्र से–

ॐ कश्यपस्यादितिः पत्नी अदितिश्चन्द्र-पत्नी च रोहिणी। बुद्धिर्विनायकश्चैव द्वितीयोपग्रहमावाहयाम्यहम्॥

(पुनः कन्यापिता द्वयोः उपग्रहयोः प्रतिष्ठां कुर्यात्)

पाधा और दो पवित्री सराई में धरे, कन्या का पिता उनकी प्रतिष्ठा करे। मन्त्र–

ॐ एतन्ते देव. (पूजनम्) पूजन करे।

ॐ यं ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति.॥

(कन्यापिता वराय सव्यहस्ते एकं उपग्रहं दद्यात्)

कन्या का पिता सराई में से एक पवित्री निकाल कर वर के सीधे हाथ में पहनावे जिस प्रकार आपने पहनी है। मन्त्र–

ॐ ब्रह्मणो ब्रह्माणी पत्नी लक्ष्मी सहितो जनार्दनः। उमया सहितः शम्भुः प्रथमोपग्रह-स्तुभ्यम्, वरः।

(पुनः कन्यापिता द्वितीयं वामहस्ते उपग्रहं दद्यात्)

फिर कन्या का पिता दूसरी पवित्री वर के बायें हाथ में पहरावे। इस मन्त्र से–

ॐ कश्यपस्यादितिः पत्नी अदितिश्चन्द्र-पत्नी च रोहिणी। बुद्धिर्विनायकश्चैव द्वितीयोपग्रहस्तुभ्यम्, वरः॥

पाधा वर को यज्ञोपवीत पहनावे। मन्त्र–

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते-र्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

(कन्यापिता वरस्याचमनम् दद्यात्)

कन्या का पिता वर के आचमन के लिए दौनों में जल भरे फिर उसकी प्रतिष्ठा करे। इस मन्त्र से–

ॐ एतन्ते देव.। पूजन करे। **ॐ यम्ब्रह्म. ॥**

फिर कन्या का पिता दौना उठाकर वर को दे, वर उस दौने के जल से आचमन करे। श्लोक–

ॐ आकाशवाहिनी गंगा करमध्ये तु पावनी। त्रैलोक्य वन्द्यते देवी आचमनं कुरुते वरः॥

(तदनन्तर वरस्य वरणं कृत्वा)

एक सराई में वर को पौंहची के वास्ते पान पर कलावा, रोली, चावल, सुपारी, मीठा, फूल ये सब सामग्री धर प्रतिष्ठा करे। मन्त्र–

ॐ एतन्ते देव. फिर नीचे लिखे मन्त्र से पूजन करे।

ॐ यम्ब्रह्म वेदान्त.। सब सामग्री चढ़ावे।

(पुनः कन्यापिता वरस्य वरणं कुर्यात्)

फिर कन्या का पिता वर के पौंहची बांधे। मन्त्र–

ॐ वरं वृणीते बलवर्द्धवैदेवां एतस्य गृहस्य होमं प्रेशंतते तस्मादेवंवर ँ समर्घ-यति क्षिप्रेण इमं गृहं जुह्वन्ति तस्माद् वरं वृणीते। तिलक करे।

(कन्यापिता वाचानऽर्घ्यं प्रतिष्ठां कुर्यात्)

फिर पाधा एक दौने में चावल, रोली धरे, उसकी प्रतिष्ठा करावे कन्या के पिता से। आगे लिखे मन्त्र से–

ॐ एतन्ते देव स.॥ फिर पूजन करे। मन्त्र–

ॐ यम्ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति.॥

(कन्यापिता वरस्य दक्षिणहस्तेऽर्घं धृत्वा पुनः दक्षिणपाणिना संपुटितं कृत्वा)

यजमान उस दौने को उठाकर वर को दे, वर सीधे हाथ पर रख ले और कन्या का पिता उस दौने पर अपना सीधा हाथ ढक कर यह श्लोक पढ़े–

यन्मया भाषितं पूर्वं कन्या मनसि कर्मणा। इदमर्घं मांगल्यमच्छिद्रकरणाय च॥ वाचा-वचनं त्वया कुर्यादहमेव प्रतिग्रही। देवद्विज प्रसादेन वाचासुवचनम्भवेत्॥

अर्थ–मैंने जो संकल्प किया था वह मेरा मनोरथ विष्णु भगवान् और देवताओं की कृपा से आज पूरा हुआ।

(वरः षडाचार्यपूजनम् कुर्यात्)

वर छः आचार्यों की पूजा करे।

(षडऽर्घान् दद्यात्)

वर के आगे छः दौने धरे, उनमें थोड़ा सा जल भरे, चावल आदि सब सामग्री गेरे, फिर प्रतिष्ठा करे। मन्त्र–

ॐ एतन्ते देव. ॥ फिर पूजन करे। मन्त्र–

ॐ यम्ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति.॥

(पुनः कन्यापिता वरसव्यहस्ते एकमर्घं धृत्वा)

कन्या का पिता एक दौना वर के सीधे हाथ पर धरे, फिर पाधा आगे लिखे मन्त्र पढ़े–

ॐ षडर्घ्या भवन्त्याचार्य्य ऋषि ऋत्वि-ग्वैवाह्यो राजा प्रियः स्नातक इति। प्रति-सम्वत्सरानर्हयेयुर्यक्ष्यमाणास्त्वृत्विज इति।

स्नातक १, गुरु २, राजा ३, मित्र ४, वर ५, ऋत्विक् ६, ये छः आचार्यों के नाम हैं।

(आचार्य लक्षणम्)

वेदांगी ब्रह्मचारी च गुणवान् सुविलक्षणः। नीतिज्ञो बुद्धिमान् श्रेष्ठ एवमाचार्य्य उच्यते॥

वेद को जानने वाला १, जितेन्द्रिय २, गुणवान् ३, विद्वान् ४, नीतिवान ५, सत्यवादी ६, ये छः लक्षण आचार्य के हैं।

(वरस्य वामपार्श्वे न्युब्जी कुर्यात्)

वर उस दौने को ईशान दिशा में रख दे, इस प्रकार कन्या का पिता ६ दौने ६ बार वर के हाथ में दे। वर लेकर ईशान दिशा में रख दे।

(अथ द्वादश आचार्यान् भूमौ स्थापयित्वा)

फिर पाधा नीचे लिखे क्रम से १२ जगह पृथ्वी में चावल धरे और यह मन्त्र पढ़ता जावे।

१–(प्रथमे)–गौरीश्वरविवाहे ब्रह्मा आचार्य्यः

२–सावित्रीब्रह्माविवाहे वृहस्पतिः आचार्य्यः

३–लक्ष्मीविष्णुविवाहे गणपतिः आचार्य्यः

४–वन्हिकाश्यपविवाहे पाराशरः आचार्य्यः

५–छायासूर्य्यविवाहे गर्गमुनिः आचार्य्यः

६–रेणुकायमदग्निविवाहे वशिष्ठः आचार्य्यः

७–मन्दोदरीरावणविवाहे वशिष्ठः आचार्य्यः

८–रोहिणीचन्द्रविवाहे द्रोणाचार्य्य आचार्य्यः

९–सीतारामचन्द्रविवाहे गौतमः आचार्य्यः

१०–द्रौपद्यर्जुनविवाहे व्यासः आचार्य्यः

११–भानुमतीभोजराजविवाहे वररुचि आ.

१२–कलियुगे सर्वे ब्राह्मणा आचार्य्याः

फिर कन्या का पिता और वर से उनकी प्रतिष्ठा करावे। मन्त्र–

ॐ एतन्तेदेव.। पूजन करे। **ॐ यम्ब्रह्म.** (प्रार्थना) फिर हाथ जोड़े। नीचे लिखे मन्त्र से–

ॐ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥

(कन्यापिता वरस्य दक्षिणजानुं सम्बोध्य)

फिर कन्या का पिता वर के सीधे घोंटे पर अपना सीधा हाथ धर के नीचे लिखा मन्त्र पढ़े–

ॐ साधुर्भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तमिति ब्रूयात्। (ॐ अर्चयेति वरेणोक्ते)

यजमान ऐसा कहे कि आप भले प्रकार की वृत्ति वाले हो मैं तुम्हारा पूजन करता हूँ। कन्या पिता के इस प्रकार कहने पर वर कहे कि करो।

(वरस्य मुकुटार्चनम् कुर्यात्)

कन्या का पिता नीचे लिखे मन्त्र से पाँचों अंगुली रोली से भर कर वर के मुकुट पर लगावे और नीचे लिखा मन्त्र पढ़े–

ॐ रोचन्ते रोचनादिंभिस्तरणीर्विश्वदर्शितो ज्योतिष्टकृदसि सूर्य विश्वमाभासि रोचनम्॥

(ततः कन्यापिता पण्डितो वा कुशमयं दूर्वामयं वा विष्टरद्वयं धृत्वा)

कन्या का पिता या पाधा कुशा या दूर्वा पर कलावा लपेट कर दो विष्टर बनाकर रख दे।

(ततो विष्टरमादाय)

फिर पाधा एक विष्टर को दौने में रखकर कन्या के पिता से उसकी प्रतिष्ठा करावे।

ॐ एतन्तेदेव.। पूजन करे। **ॐ यम्ब्रह्म.।।**

(कन्यापिता विष्टरार्धं सव्यहस्ते गृहीत्वा)

कन्या का पिता विष्टर का दौना अपने सीधे हाथ में ले, पाधा नीचे लिखा हुआ मन्त्र पढ़े–

ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरं इत्यन्येनोक्ते

ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत्

(वरो विष्टरं गृहीत्वा) वर ऐसा कहे।

कन्या का पिता दौने में से वह विष्टर उठाकर वर के हाथ में दे

ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय।

वर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर विष्टर पर बैठे।

ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानामुद्यतामिव सूर्यः।
इमन्तमभितिष्ठामि योमां कश्चाभिदासति।।

(इत्यनेन आसने उत्तराग्रविष्टरोपरि वर उपविशति)

वर उस विष्टर का उत्तर को मुँह करके सीधे पैर के तले धरे।

(ततो यजमानः पाद्यमादाय)

पाधा एक दौने में जल भरे उसमें इतनी चीज गेरे।

जलं च कुकुमं चैव तण्डुलं पुष्पमेव च।
सर्वौषधिसमायुक्तं पञ्चाङ्गं पाद्यमुच्यते।।

जल, चावल, केशर, फूल, सितावर ये पाँच चीज गेरे। फिर नीचे लिखे मन्त्र से उसकी प्रतिष्ठा करे।

ॐ एतन्तेदेव.।। फिर पूजन करे। मन्त्र–

ॐ यम्ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति.।।

(पुनः कन्यापिता पाद्यं गृहीत्वा)

फिर पाधा उस दौने को कन्या के पिता के हाथ पर रखकर नीचे लिखे मन्त्र पढ़े-

ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यमित्यन्येनोक्ते।
ॐ पाद्यं प्रतिगह्यतामिति दाता वदेत्।
ॐ पाद्यं प्रतिगृह्णामीत्यमिधाय वरः॥

(यजमानांजलितोंजलिना पाद्यमादाय वरः)

कन्या के पिता से वर उस दौने को अपने सीधे हाथ से लेकर।

(इति दक्षिणं चरणं प्रक्षाल्यानेनैव क्रमेण वामचरणं प्रक्षालनम्)

वर उस दौने के जल को अपने सीधे पैर के अंगूठे पर गेरे और कन्या का पिता धोवे। नीचे लिखे मन्त्र से-

ॐ विराजो दोहोसि विराजो दोहमसि मयि पाद्यायै विराजो दोहः॥

(कन्यापिता हस्तौ प्रक्षाल्य)

फिर कन्या का पिता नीचे लिखे श्लोक से हाथ धोवे। मन्त्र-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोपि वाः। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

(ततः पूर्ववद्विष्टरान्तरं गृहीत्वा)

पाधा पहली प्रकार दूसरा भी विष्टर करावे, पीछे देखकर।

(ततोऽर्घमादाय)

एक दौने में नीचे लिखी वस्तुएँ रखें-

जलक्षीरकुशाग्राणि दधिदूर्वाक्षतां स्तथा।
यवांश्च कुंकुमञ्चैवेत्यष्टाङ्गम् ह्यर्घ्यमुच्यते॥

अर्थ–जल, दूध, कुशा, दही, दूब, चावल, जौ और केशर डालकर प्रतिष्ठा करे। मन्त्र–

ॐ एतन्ते देव.। पूजन करे। **यम्ब्रह्म वेदान्त.।।**

(आचार्य द्वारा कन्यापिता हस्तार्घं गृहीत्वा)

पाधा उस दौने को उठाकर कन्या के पिता के हाथ में देकर यह आगे लिखा मंत्र पढ़े–

ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घ इत्यन्येनोक्ते
ॐ अर्घः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत्।
ॐ अर्घं प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय।।

(वरो यजमानहस्तादर्घं मन्त्र पठेत्)

कन्या के पिता से वर उस दौने को अपने हाथ में ले। मंत्र–

ॐ आपःस्थ युष्माभिः सर्वान् कामान-वाप्नुवानिति।

(इत्यर्घं वामहस्ते गृहीत्वा सव्यहस्तेन शिरसि किंचिदक्षतादिकं धृत्वा)

वर उस दौने को बायें हाथ में ले और सीधे हाथ से उस दौने में से चावल लेकर अपने मौड़े के ऊपर छोड़े।

(पुनः सव्यहस्ते गृहीत्वा)

फिर उस दौने को सीधे हाथ में लेकर यह मंत्र पढ़े–

ॐ समुद्रं वः प्रहणोमि स्वां योनिंमभि-गच्छत।। अरिष्टोस्माकं व्वीरा मापरासे-चिमत्पयः।।

(इत्यर्घं पात्रस्थं जलमीशान्यां दिशि क्षिपेत्)

उस दौने को ईशान दिशा में जल गेरकर छोड़ दे।

(ततः आचमनीयार्घमादाय)

एक दौने में जल भरे, कन्या का पिता उसकी प्रतिष्ठा करे।

ॐ एतन्ते देव. पूजन करे। मन्त्र–

ॐ यम्ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति.॥

(पुनः कन्यापिता आचमनीयपात्रमादाय)

फिर कन्या का पिता उस दौने को सीधे हाथ में ले। मंत्र–

ॐ आचमनीयमाचमनीयमाचमनीय-मित्यन्येनोक्ते। ओ३म् आचमनीयं प्रतिगृह्य-तामिति दाता वदेत्। ओ३म् आचमनीयं प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय॥

(वरो यजमानहस्तादाचमनीयं गृहीत्वा)

कन्या का पिता वर के सीधे हाथ में दौने को दे। इस मंत्र से–

ॐ आऽमाऽगन्यशसा स ᳪ सृज वर्च्चसा। तम्माकुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूना-मरिष्टिं तनूनाम्॥

(इत्यनेन सकृदाचमेत् द्विस्तूष्णीं आचमेत्)

वर इस दौने को बायें हाथ में रखकर सीधे हाथ में उसका जल लेकर इस मंत्र से तीन बार आचमन करे–

ॐ गंगा विष्णुः ३॥ इसको तीन बार पढ़े।

(पुनः आचमनीयपात्रं भूमौ क्षिपेत्)

फिर उस दौने को पृथ्वी पर रख दे–

(वरस्य हस्तौ प्रक्षाल्य)

फिर वर इस मंत्र से हाथ धुलावे–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा.॥

(ततो यजमानः कांस्यपात्रस्थ दधिमधुघृतानि अन्येन पात्रेण पिहितानि कराभ्यामादाय)

कन्या का पिता काँसे के पात्र में या अलवी में गाय का दही, घृत, शहद गेरे फिर उनको ढाक के पत्ते से ढककर उसकी प्रतिष्ठा करे।

ॐ एतन्ते देव.। फिर पूजन करे। **यम्ब्रह्म वेदान्त.।।**

(कन्यापिता दधिपात्रं गृहीत्वा)

पाधा उस दही के पात्र को कन्या के सीधे हाथ में दे और यह मंत्र पढ़े-

ॐ मधुपर्को• मधुपर्को मधुपर्कइत्य-न्येनोक्ते।

ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत्।

ॐ मधुपर्कं प्रतिगृह्णामीत्यभिधायैव वरः।।

ॐ मित्रस्येति प्रजापतिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दो मित्रो देवता मधुपर्क-दर्शने विनियोगः।

कन्या का पिता थोड़ा सा जल छोड़े।

(वरो मधुपर्कं निरीक्ष्य)

उस पात्र को उघाड़ कर वर को दिखावे कि दही में कुछ अशुद्ध वस्तु न हो। मंत्र-

ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्तां मित्रस्यत्वा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य त्वा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षामहे।।

(वरो यजमान हस्तान्मधुपर्कं गृहीत्वा)

कन्या का पिता दही का पात्र वर को दे, वर उसको हाथ में ले ले। मंत्र-

---

● नोट- सर्पिरेकगुणं प्रोक्तं शोधितं द्विगुणं मधुः। मधुपर्कविधौ प्रोक्तं सर्पिषा च समंदधि।। घी एक गुणा, शुद्ध शहद दो गुणा और दही समभाग होना चाहिए। मधुपर्क उसको कहते हैं जो दही में शहद मिलाया जाता है।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि।।

(इत्यनेन मधुपर्कं गृहीत्वा वामहस्ते धृत्वा)

वर उस पात्र को बायें हाथ पर रखकर यह मंत्र पढ़े–

ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने। यत्तआविद्धं तत्ते निष्कृन्तामीति।।

(इत्यनेन अनामिकांगुष्ठाभ्यां त्रिःप्रदक्षिणा मालोड्य भूमौ किंचिन्निक्षिप्य पुनस्तथैक वारत्रयं निक्षिपेत्)

वर कनकी अंगुली के पास की अंगुली और अंगूठे से उसे चलावे थोड़ा सा तीन बार पृथ्वी में छींटा लगाकर–

(वरः स्वयमेव प्राशयेत्)

वर उसमें से दही लेकर आप ही खा ले। मन्त्र–

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परम छं रूपमन्नाद्यम्। तेनाऽहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि।।

(इत्यनेन वारत्रयं मधुपर्कप्राशनम्)

इस मंत्र से तीन बार दही खाये जो ऊपर लिखा है।

(सर्वं वा प्राश्नीयात्)

अथवा सब खाले या मुंह से लगाले।

(ततो मधुपर्कंशेषमसंचरेदेशे उत्तरतो वा निदध्यात्)

बाकी मधुपर्क को वेदी से अलग उत्तर की तरफ रख दे।

(वर यजमानौ हस्तौ प्रक्षाल्य)

फिर वर और कन्या का पिता दोनों हाथ धो डालें। मन्त्र–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा.।।

(ततो वरः वारत्रयं आचमेत्)

फिर वर तीन बार आचमन करे। मंत्र–

ॐ गंगा विष्णुः ३॥ ये तीन बार पढ़े।

(उच्छिष्टदूरीकरम्)

दही के पात्र को वहां से उठवा दे। फिर उस जगह जल का छींटा लगावे, नीचे लिखे मंत्र से–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा.॥

(अथांगन्यासः)

एक दौने में जल, चावल, पान, सुपारी, कलावा, दक्षिणा धरकर वर के सीधे हाथ में दे। वर उस दौने को अपने अंग से लगाता जावे नीचे लिखे श्लोक के प्रमाण से–

ॐ वाङ्मआस्येऽस्तु ॐ नसोर्मेप्राणोऽस्तु।

मुख से — नासिका से

ॐ अक्ष्णोर्मेचक्षुरस्तु ॐ कर्णयोर्मेश्रोत्रमस्तु

नेत्रों से — कानों से

ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु•

भुजाओं से — जांघों से

ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु॥ सब अंगों से स्पर्श करे।

फिर वर उस दौने को वेदी से अलग उत्तर में रख दे।

(अथ गोदानम्) फिर कन्या का पिता वर को गौ दे।

ॐ गौर्गौर्गौरिति वरयजमानेनोक्ते।

यजमान वर को 'गौर्गौर्गौ' तीन बार कहावे।

(गोदानसंकल्पः)

कन्या का पिता गौ या उसकी दक्षिणा का संकल्प करे। मंत्र–

• पहले सीधी आँख से लगावे फिर बायीं आँख से, इसी प्रकार कानों से और कन्धों और जांघों से लगावे।

अद्येत्यादिमासानां मासोत्तमेमासे अमुक-मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोऽहं अमुकशर्म्माहं आत्मनः पुत्री-विवाहसांगताफल सिद्ध्यर्थंश्रीयज्ञपुरुष-नारायणप्रीत्यै मधुपर्कसम्बन्धिनीं इमां गां तन्मूल्योपकल्पितां रजतमयी दक्षिणां यथा-नाम गोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय (ब्राह्मण को) वर्मणेक्षत्रियाय (क्षत्रिय को) गुप्ताय वैश्याय (वैश्य को) शूद्राय (शूद्र को) विष्णुरूपाय वराय तुभ्यमहं संप्रददे।

यह दक्षिणा या गौ वर को दे, वर ऐसा कहे (ॐ स्वस्ति) फिर पाधा लड़की को तैयार करने को कहे।

(गोदान प्रतिष्ठासंकल्पः)*

कन्या का पिता गोदान की प्रतिष्ठा का संकल्प कर वर को दे।

अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमे मासे. गोदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं ताम्रमर्कदैवतं रजतं चन्द्रदैवतं वा तुभ्यमहमुत्सृजे।

(ततो वरस्तृणं यजमानने सह गृहीत्वाऽग्रिम मन्त्रं पठेत्)

पाधा वर और यजमान दोनों के हाथ में दूर्वा दे और यह अगला मंत्र पढ़े। मंत्र–

•ॐ माता रुद्राणां दुहितावसूना ँ स्व

---

*दोनों गोदान ब्राह्मण को लेना चाहिए।

•वर गौ को त्याग दे, या दान कर दे, या वन में छोड़ दे। तृण को भक्षण कर हमको पुष्ट करे, क्योंकि गौ रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री और देवताओं की भगिनी है।

(याज्ञवल्क्य स्मृति अध्याय १)

सादित्यानाममृतस्य नाभिः। प्रणुव्वोचं चिकितुषेजनाय मागाभनागामदितिंवधिष्टः। ममचाऽमुष्य यजमानस्य च पाप्माहतः॥

(ॐ उत्सृजततृणान्यतु दंधृत्योत्सृजेत् इति ब्रूयात्)

वर और कन्या का पिता दोनों उस दूर्वा को खींचकर तोड़ डालें, फिर दूर्वा को पृथ्वी पर रख दें।

(वेदिकाकार्य्यं सम्पादयेत्)

अब वेदी का कार्य सम्पादन करे।

(यजमानः पृथिव्या आवाहनम् कुर्यात्)

कन्या का पिता धरती पर आवाहन करे। मन्त्र–

ॐ विष्णुनालकरूपेण जगतां पतिनोद्-धृतां। क्षमायुक्तां धरणीं च पृथ्वीमावा-हयाम्यहम्॥

पूजन कर हाथ जोड़े। मंत्र–

ॐ सयोना पृथिवी नो भवानृक्षरावेशनी। यच्छानः शर्म्मसम्प्रथाः॥ पृथिव्यैनमः॥

(पंचभूसंस्कारान् कुर्यात्)

अब नीचे लिखे मंत्रों से वेदी का संस्कार करावे।

(ततो वेदिकायां तुषकेशशर्कराभस्मादिरहितायाम्)

पाधा वेदी को देखले कुछ अशुद्ध वस्तु तृणादि न हों।

(हस्तमात्रपरिमितान् चतुरस्त्रभूमि कुशैः परिसमुह्य)

एक हाथ भर चतुष्कोण (अर्थात्) चौकोर वेदी पर कुशाओं से जल का छींटा लगावे।

(तान् कुशान् ऐशान्यां दिशि त्यजेत्)

उन कुशाओं के ईशान दिशा में रख दे।

(गोमयोदकेनोपलिप्य) वेदी पर गौ के गोबर से लीपें।

(स्त्रुवमूलेन प्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य)

स्त्रुवे की जड़ से वेदी पर तीन लकीर खींचे।

(उल्लेखनक्रमेण अनामिकांगुष्ठाभ्यां मृदुमुद्धृत्य)

कनकी अंगुली के पास की अंगुली और अंगूठे से वेदी की उन रेखाओं पर से कुछ मिट्टी ऊपर की उछाले।

(जलेनाभ्युक्ष्य) फिर कुशा से जल का छींटा लगावे।

***(नूतनकांस्यपात्रे अग्निमानीय स्थापन कुर्यात्)**

नये कांसे के पात्र या सकोरे में अग्नि मंगाकर, अपने आगे सराई से ढककर रखले। फिर वर तथा कन्या का पिता नीचे लिखे मन्त्र से आवाहन करे।

मुखं समस्तदेवतानां खाण्डवोद्यानदाहकम्।
पूजितं सर्वयज्ञेषु अग्निमावाहयाम्यहम्।।

(सम्पूज्य प्रार्थना) पूजन कर हाथ जोड़े इस मंत्र से-

ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रवै-देवान--आसादयादिह ।।१।। अग्नये नमः।।

(कन्यापिता करश्च स्त्रुवस्य प्रतिष्ठापूजनम् कुर्यात्)

यजमान और वर इन मन्त्रों से स्त्रुवे की प्रतिष्ठा पूजन करें।

ॐ एतन्ते देव सवित.।। (पूजनम्) पूजन करे।

ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमं पुरस्ता.।।

(समिधामाधाय अग्निस्थापनं कुर्यात्)

पाधा वेदी पर लकड़ी धर अग्नि रख दे।

●(ततः स्नातां कन्यामानीय)

फिर पाधा स्नान कराकर कन्या को बुलावे।

(ततः कन्यापिता तत्रागत्य उपानहौ त्यजेत्)

कन्या का पिता कन्या के जूते निकालकर अलग रख दे। इस मन्त्र से-

---

* अग्नि को नाई से नहीं मंगाना चाहिए।

● कन्या को स्नान कराकर अपने घर के आभूषण पहनाकर कन्या का मामा या भाई मण्डप के नीचे वर के सीधी तरफ लाकर बैठा दे। वर ऐसा कहे कि 'आइये'!

ॐ अथ वाराह्या उपानहा उपमुच्येते.॥

ॐ अथ वाराह विहित.॥

(कन्यापिता हस्तौ प्रक्षाल्य)

फिर कन्या का पिता हाथ धो डाले, नीचे लिखे मंत्र से–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा.॥

(आचार्यो मौड़ीमर्चयेत्)

फिर पाधा मौड़ी के चारों ओर रोली लगाकर उसकी प्रतिष्ठा वर से करावे, आगे लिखे मंत्र से–

ॐ एतन्ते देव.॥ पूजन करे। **ॐ यम्ब्रह्म.॥**

(पुरोहित कन्याशिरसि मुकुटं धारयेत्)

यजमान का पुरोहित कन्या के सिर से मौड़ी बांधे इस मंत्र से–

शुक्लांवरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतु.॥

(पुन कन्या स्वस्तिवाचन कारयित्वा)

फिर कन्या से स्वस्तिवाचन करावे, यह मन्त्र पढ़े–

•ॐ गणानां त्वा गणपति ठं.॥

(कन्याप्रतिज्ञासंकल्पः)

फिर कन्या जल, चावल, दक्षिणा लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे।

ॐ अद्य तत्सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णु. अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुक गोत्रोऽहं अमुकनाम्नी अहं आत्मनः विवाहोद्देश्ये गणेशादीनां आवाहनं पूजनं च करिष्ये॥

• ॐ गणानां त्वा गणपति ठं............... इसको पूरा पढ़े।

(कन्या गणेशादिपूजनं कृत्वा)

कन्या गणेश आदि से लेकर सब देवताओं का पूजन करे।

•(ततः कन्यापिता वराय वस्त्रचतुष्टयं दद्यात्)

कन्या का पिता वर को यथाशक्ति ४ वस्त्र दे पहले पाधा उनकी प्रतिष्ठ यजमान से करावे, ये मन्त्र पढ़े–

ॐ एतन्ते देव.॥ पूजन करे। **ॐ यम्ब्रह्म.॥**

(कन्यापिता वस्त्र चतुष्टय संकल्पं कृत्वा)

कन्या का पिता जल, चावल, दक्षिणा लेकर ४ वस्त्रों का संकल्प करे।

अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकावासरे अमुकगोत्रोऽहं अमुकशर्म्माहं आत्मनः पुत्रीविवाह सांगताफलसिद्ध्यर्थं श्रीयज्ञपुरुषनारायणप्रीत्यै चतुर्वस्त्रं विष्णुदैवतो यथा नामगोत्राय ब्राह्मणाय वराय विष्णुरूपाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

कन्या का पिता वे चार वस्त्र वर को दे दे।

(वरः एकं वस्त्रं कन्यायै दद्यात्)

वर उसमें से एक धोती कन्या को दे, नीचे लिखे मन्त्र से–

ॐ जराङ्गच्छ परिधत्स्व वासो भवा कृष्टीनामभिशस्ति पावा शतञ्च जीव शरदः सुवर्च्चारयिञ्च पुत्राननु संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः॥

वर उस धोती को कन्या के सीधे घोंटे पर रख दे।

(वरो द्वितीय वस्त्रं कन्यायै दद्यात्)

वर दूसरा वस्त्र दुपट्टा कन्या को दे, आगे लिखे मन्त्र से–

•४ वस्त्र–दुपट्टे २ और धोती २ कन्या और वर को देना चाहिए।

ॐ याअकृन्तन्नवयन्या अतन्वत याश्च-देव्यस्तन्तूनभितस्ततंथ।। तास्ता देवीर्जरसे-संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः।।

वर उस दुपट्टे को कन्या के सीधे कन्धे पर रख दे।

(वरस्तृतीय वस्त्रं गृहीत्वा)

वर तीसरा वस्त्र अर्थात् धोती हाथ में ले और मन्त्र पढ़े-

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुष्ट्वाय जरदष्टिरस्मि। शतञ्च जीवामि शरदः पुरू चीरायस्पोषमाभिसंव्ययिष्ये।

वर उस वस्त्र को अपने घोटि पर रख ले।

(वरः चतुर्थवस्त्रम् गृहीत्वा) वर चौथा वस्त्र हाथ में ले। मंत्र-

ॐ यशसामाद्यावापृथिवीयशसेन्द्राय बृहस्पतिः। यशोभगश्चमाविदद्यशो माप्रति-पद्यताम्। (इति पठित्वोत्तरीयं परिधत्ते)

वर उस दुपट्टे को अपने सीधे कन्धे पर रखे ले।

(ततः कन्याया वरस्य च द्विराचमनम्)

पाधा वर कन्या दोनों को आचमन करावे। इस मंत्र से-

ॐ गंगाविष्णुः ३ ।। तीन बार पढ़े।

(हस्तौ प्रक्षाल्य) फिर हाथ धो डाले। मंत्र-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा.।।

(ततः कन्याप्रदेन परस्परं समंजेथामितिप्रेषितयोः *परस्परं सम्मुखीकरणम्)

---

*कन्या का मुख पूर्व की ओर वंर पश्चिम की ओर मुख करके कन्या का मुख देखे। इससे आपस में प्रीति होती है।

वर और कन्या आपस में मुँह देख लें।

(वरं मंत्रं पठेत्) वर इस मन्त्र को पढ़े–

ॐ समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानिनौ। सम्मातरिश्वा संधाता समुद्रेष्ट्री दधातु नः॥

(ततः कन्याप्रदकर्तृक ग्रन्थिबन्धनम्)

कन्या का पिता वर और कन्या दोनों के वस्त्रों में गाँठ बाधे, वर के वस्त्र की कोण में दूर्वा, चावल, दक्षिणा, दुपट्टे के पल्ले में बांधे और कन्या के दुपट्टे की सीधी कोण में ४ हल्दी की गाँठ, ४ सुपारी, चावल, दूर्वा, पुष्प, दक्षिणा चोले के पल्ले में बांध कर छोड़ देवे।

(यजमानः कन्यावरयोर्हस्तलेपनं कुर्यात्)

कन्या का पिता, कन्या और वर के हाथों पर हल्दी लगावे। कन्या के दोनों हाथों में और वर के सीधे हाथ में। मन्त्र–

लक्ष्मीप्रिया हर्षदात्री लक्ष्मीरिव जनप्रिया। सौभाग्यदा, वरस्त्रीणां हरिद्रे श्रीः सदाऽस्तु मे॥

वर, कन्या दोनों के हाथ में दक्षिणा और कलावे का एक-एक सिरा दे दे।

(प्रथमं वरपक्षे पुरोहितः शाखोच्चारणम्)

पहले वर की तरफ से पुरोहित शाखोच्चार पढ़े–

ओं श्रीमत्पंकजविष्टरौ हरिहरौ वायुर्महेन्द्रो नलश्चन्द्रो भास्करवित्तपालवरुणः प्रेताधिपाद्या ग्रहाः॥ प्रद्युम्नो नलकूबरौ सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः। स्वामी शक्तिधरश्च लांगलधरः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥१॥ गौरी श्रीकुलदेवता च सुभगा भूमिः प्रपूर्णा शुभा। सावित्री व सरस्वती च सुरभिः सत्याव्रतऽरुन्धती॥ स्वाहा जाम्बवती च रुक्मभगिनी दुःस्वप्नविध्वंसिनी। वेला चाम्बुनिधेः

समीनमकरा कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥२॥ गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्वदा। कावेरी सरयूः महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका॥ क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता च या गण्डकी। पुण्याः पुण्यजलैः समुद्रसहितः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥३॥ लक्ष्मीकौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा। धेनुः कामदुधा सुरेश्वर गजो रम्भा च देवांगना॥ अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शंखोऽमृतं चाम्बुधेः। रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥४॥ नेत्राणां त्रितयं शिवं पशुपतेरग्नित्रयं पावनम्। यद्विष्णोश्च पदत्रयं त्रिभुवनं ख्यातं च रामत्रयम्॥ गंगावाहपथत्रयं सुविमलं वेदत्रयं ब्राह्मणाः। सन्ध्यानां त्रितयं द्विजैरभिहितं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥५॥ बाल्मीकि सनकः सनन्दनमुनिर्व्यासो वशिष्ठोभृगुर्जावालिर्जमदग्नि रामजनकौ गंगाधरो गौतमः॥ मान्धाता ऋतुपर्णवेण सगरा धन्यो दिलीपो नलः। पुण्यो धर्मसुतो ययाति नहुषः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥६॥ अश्वत्थो वटवृक्षचन्दनतरुर्मन्दारकल्पपद्रुमो। जम्बूनिम्बकदम्बनूतनरसा वृक्षाश्च ये क्षीरिणः॥ सर्वेते फलमिश्रिताः प्रतिदिनं वैराजितं राजते। रम्यं चैत्ररथं सनन्दनवनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥७॥ गंगा गोमतिगोपतिर्गणपतिर्गोविन्दगोवर्धनौ। गीता गोमयगोरिजा गिरिसुता गंगाधरो गौतमः॥ गायत्रीगरुड़ो गदागिरिगजा गम्भीरगोदावरी। गंधर्वग्रहगोपगोकुलगणाः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥८॥ इत्युक्तं वरमंगलाष्टकमिदं संचित्यनामा स्थितं। गंगासागरसंगमः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥९॥

(अथगोत्रोच्चारणम्)

फिर गोत्र और पीढ़ियों का उच्चारण करे।

अद्याऽमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुक शर्म्मणः प्रपौत्राय ॥१॥ अद्याऽमुक गोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशर्मणः पौत्रायः ॥२॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुक-शर्मणः पुत्राय ॥३॥

(त्रिबारं पठेत्) इस प्रकार तीन बार पढ़े।

(पुनः कन्यापक्षे शाखोच्चारणं)

फिर कन्या का पुरोहित शाखोचार पढ़े जिस प्रकार वर के पुरोहित ने पढ़ा है फिर पीढ़ियों का उच्चारण करे।

अद्यामुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शर्म्मणः प्रपौत्रीयम् ॥१॥ अद्यामुकगोत्र-स्यामुक प्रवरस्यामुकशर्मणः पौत्रीयम् ॥२॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्रीयम् ॥३॥

(त्रिबारं पठेत्) इस प्रकार तीन बार पढ़े।

(कन्यावरस्योरुपरि अक्षतान् क्षिपेत्)

प्राधा नीचे लिखे मन्त्र से वर कन्या पर चावल छोड़े।

शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं.॥

(कन्यायाः पिता निजपुत्री संकल्पयेत्। निजपत्न्या ग्रन्थिबन्धनं कृत्वा पणकं वा संस्पर्श्य समानयेत्)

कन्या का पिता कन्या का संकल्प करे और अपनी स्त्री से गठजोड़ा बाँध कर या एक पैसा छुवाकर मंगाले।

(दाता शंखस्थदूर्वाक्षत फलपुष्पचन्दनजलान्यादाय-जामातृदक्षिणकरोपरि कन्यादक्षिणकरं निधाय)

कन्या का पिता ये सामग्री अपने हाथ में शंख, चन्दन, दूर्वा, चावल, फूल, फल और दक्षिणा ले कन्या के सीधे हाथ के अंगूठे को अपने सीधे हाथ में थामे और कन्या के हाथ के बराबर (वर) अपना सीधा हाथ करले और मन्त्र पढ़े--

*दाताहं वरुणोराजाद्रव्यमादित्य दैवतम्।
वरोसौविष्णुरूपेण प्रतिगृह्णात्वयंविधिः॥

(वरस्य वामहस्ते द्रव्यं धृत्वा)

वर के बायें हाथ के नीचे यथा शक्ति पैसे धर संकल्प करे।

● कन्यादान-संकल्पः ●

•ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय श्रीनारायणस्य नाभिकमलोद्भूत सकललोकपितामहेन ऐरावतपुण्डरीक श्रीकूर्मवाराहसप्तद्वीपमण्डितायां पृथिव्यां जम्बूद्वीपे भरतखंडे निखिलजलपावने आर्य्यावर्तैकदेशे बहुक्षेत्रान्विते भरतखंडे श्रीगंगा-यमुना-सरस्वती गोदावरी नर्मदा सरयू बहुतीर्थ-सम्पन्ने पावन विष्णुलोकरुद्रलोक ध्रुवलोक

---

* कन्या का पिता वर से कन्यादान स्वीकार करने की प्रार्थना करे और वर अपना सीधा हाथ कन्यादान लेने को फैलावे।

● इस समय जो कुटुम्बी या रिश्तेदार स्त्री पुरुष जो कुछ कन्यादान में देना चाहें अपने-अपने हाथ में ले लें, अपने गोत्र का नाम और अपना नाम लेकर संकल्प के बाद वर को दे दें।

निवास सिद्ध्यर्थं श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे पुण्यामुकक्षेत्रे शुभसम्वत्सरे अस्मिन् अमुकायने गत सूर्य्ये अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुक ऋतौ अमुकनामनक्षत्रे यथायोगकरणमुहूर्ते वर्तमान चन्द्रतारानुकूले एवं ग्रहगुणविशिष्ठायां अस्यां पुण्यबेलायां अमुकगोत्रो अमुकराशिः अमुकशर्म्मा सपत्नीकोऽहं अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनो अमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः प्रपौत्राय ॥१॥ अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनो अमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः पौत्राय ॥२॥ अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनो अमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः पुत्राय ॥३॥ (त्रिवारं पठेत्)●

वर का पुरोहित इस प्रकार तीन बार पढ़े।

अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुक-

● पहले पाथा वर के पड़बाबा और बाबा तथा पिता का नाम ले, फिर कन्या की तीनों पीढी का उच्चारण करे। इस प्रकार तीन बार कहे।

वेदिनो अमुकशाखिनो अमुकशूत्रिणो अमुकशर्म्मणः प्रपौत्रीम् ॥१॥ अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनोऽमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः पौत्रीम् ॥२॥ अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनो अमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः पुत्रीम् ॥३॥ (त्रिवारं पठेत्)

कन्या का पुरोहित इस प्रकार तीन बार पढ़े।

इमां कन्यां सालंकारां स्वर्णजटितमणिमोक्तिकबिद्रुमाहतधौतरक्तपीतकौशेय शोभितां ताम्बूलपूगीफलागुरु-कर्पूर-श्री खंड-कस्तूरिका कुंकुमलवङ्ग जातिफल चम्पक मालतीकुसुमराज विविधफल तूलिकादि रौप्यकांस्यताम्रमृण्मयभाण्डादीनां गोवृषमहिष्युष्ट्राजादिकादासदासीनां ग्रामादीनां अन्नपानलवणसर्वोपस्करसहितां यथाशक्तिहिरण्यमग्निदैवतं कांस्यपात्रसोमदैवतं ताम्रपात्रमर्कदैवतं व्यञ्जनकं वायुदैवतं अश्वमादित्यदैवतं गोवृषं रुद्रदैवतं दासदासी प्रजापतिदैवतं वा शैय्यातूलिकानानाविधमिन्द्रदैवतं मूलं नागदैवतं ग्रामं प्रजापतिदैवतं

महिषी धर्मदैवतं वासो बृहस्पतिदैवतं मणिमौक्तिकं रुद्रदैवतं सर्वोपरस्करं विष्णु-दैवतं महद्वस्वत्रद्वयावृतां विवाहदीक्षितां प्रजापतिदैवतं शतजन्मब्रह्मलोकनिवासार्थं एतानि वस्तूनि यत्किंचित्किंचित्प्रत्यक्षं अ-मुकनाम्नीं कन्या लक्ष्मीरूपां अमुकगोत्रायामुकनाम्ने वराय विष्णरूपाय पत्नीऽवेन-तुभ्यमहं संप्रददे।

फिर कन्या का पिता कन्या का हाथ और सब वस्तु वर के हाथ में दे, वर ऐसा कहे (ओं स्वस्ति) फिर वर पैसों पर से अपना हाथ उठाले और वह पैसे गुजराती या पड़िये को उठवा दे।

(कन्यादानप्रतिष्ठासंकल्पः)

फिर कन्या का पिता यथा शक्ति दक्षिणा, जल अक्षत लेकर कन्यादान प्रतिष्ठा का संकल्प करे। जो निकट सम्बन्धी स्त्री-पुरुष कन्यादान लें वे भी संकल्प करें।

अद्याऽमुकगोत्रोऽहममुकशर्म्माहं कृतैतत् कन्यादान प्रतिष्ठा सांगताफल प्राप्त्यर्थं हिरण्यमग्निदैवतं अमुकगोत्राय अमुकनाम्ने वरायामुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय विष्णुरूपाय इमां दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।। वर को दे दे।

(ततो वरः इमं मन्त्रं पठेत्)

वर यह मन्त्र अपने मुख से उच्चारण करे-

ॐ कोदात्कस्मादात् कामोदात् कामा-
यादात्। कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता
कामैतत्ते॥

(कन्यापिता प्रार्थनां कुर्यात्)

कन्या का पिता हाथ जोड़े और पाधा नीचे लिखे मन्त्र पढ़े।

कन्यां कनकसम्पन्नां वस्त्राभरणैर्युताम्।
दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोकजिगीषया
॥१॥ ऋषयः सर्वभूतानां साक्षिणः सर्व-
देवताः। इमां कन्या प्रदास्यामि पितृणां
तारणाय च ॥२॥ कन्यादानं महादानं
सर्वदानेषु दुर्लभम्। तदद्य दैवयोगेन त्वं
गृहाण वरोत्तम ॥३॥ गौरी कन्यामिमां विप्र
यथाशक्ति विभूषितां। गोत्राय शर्मणे तुभ्यं
दत्तां विप्र समाश्रय ॥४॥ मम वंशमुद्भूतां
यावद्वर्षाणि पालितां। तुभ्यं वर मयादत्ता
पुत्रपौत्रप्रवर्द्धिनी ॥५॥

(कन्यापुरोहिताय वरोभार्याप्रतिग्रहदोषनिवारणाय गोदानं ददाति) ब्राह्मणों के यहां शुक्लों को पदार्थ देवे। वर कन्या पुरोहित को गौ दान दे। (गोदानसंकल्पः)

अद्येत्यादिमासानां मासोत्तमेमासे अमुक-
गोत्रोऽहं अमुकनामाऽहं भार्य्या प्रतिग्रहदोष-
निवारणार्थं इमां गां सवत्सां गोविन्ददैवतं

यथावस्तु यथोपस्कर सहितां तरुणीरूप संयुक्तां सुशीलां च पयस्विनीम् कामाक्षीं वातन्निष्क्रयिणीं दक्षिणां हिरण्यमग्निदैवतं रजतंचन्द्रदैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणं ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

(गोदानप्रतिष्ठासंकल्पः)

जल, चावल, दक्षिणा लेकर गोदान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

गोदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं ताम्रमर्कदैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्र-ददे।।

ब्राह्मण को दे दे।

(वैश्यगृहे आश्रिताय वत्सरीं दद्यात्)

वैश्य के यहां आश्रित को बछिया देवे।

(पुनः भूयसीं दक्षिणां दद्यात्)

वर ब्राह्मण को यथाशक्ति दक्षिणा दे, फिर पाधा वर कन्या दोनों पर चावल छोड़े नीचे लिखे मन्त्र से-

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशाय मित्राणा-मुदयस्तव।।

(कन्या वरयोर्वस्त्रग्रन्थिपूजनम्)

वर कन्या दोनों के वस्त्रों में गांठों की प्रतिष्ठा पूजन करे।

ॐ एतन्ते देव. ।। पूजन करे **ॐ यम्ब्रह्म.।।**

पाधा वर कन्या दोनों के वस्त्रों की गाँठ बांध दे। मन्त्र-

गणाधिपं नमस्कृत्य उमां लक्ष्मीं सरस्वतीम्। दम्पत्यो रक्षणार्थाय पटग्रन्थिम् करोम्यहम्।। श्रीदेवदेव कुरु मङ्गलानि सन्तानवृद्धिं कुरु सन्ततञ्च। धनायुर्वृद्धिं कुरु इष्टदेव, मद्ग्रन्थिबन्धे शुभदा भवन्तु।।

(ततस्ताम् पाणौ गृहीत्वा)

वर कन्या के सीधे हाथ को थाम कर यह मन्त्र पढ़े–

ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोनुपवमानो वा। हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु।। (श्रीअमुकदेवी) वर कन्या का जो नाम हो ले।

(ततो वेदीदक्षिणस्यां दिशि वारिपूर्णदृढ़कलशमूर्ध्वं तिष्टतो मौनिनः पुरुषस्य स्कन्धे अभिषैकपर्यन्तं धारयेत्)

वेदी से दक्षिण दिशा में जल भरे पंच पल्लव युक्त एक कलश को लेकर ब्राह्मण खड़ा हो जावे और कंधे के प्रमाण ऊंचा रक्खे तथा मार्जन के समय तक मौन खड़ा रहे।

अथ कुशकण्डिकाकरणम्

(ब्राह्मणवरणसंकल्पः)

वर एक पान पर रोली, चंदन, चावल, कलावा, दक्षिणा और पुष्प रख कर संकल्प करे–

अद्येत्यादिमासानां मासोत्तमे मासे. अमुकगोत्रोऽहं अमुकशर्म्माऽहमद्यकर्त्तव्य-विवाहहोमकर्म्मणि कृताकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म्म कर्तुममुकगोत्रममुक शर्म्माणं

ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दन ताम्बूल वासोभि-र्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे।

उस पान पर से कलावा लेकर जो ब्राह्मण ब्रह्मा बने उसके पौंहची बांधे।

ॐ वृतेन दीक्षामाप्नोति.॥

(तिलकम्) पान की रोली से तिलक करे।

नमो ब्रह्मण्य.॥ (वृतोस्मीति प्रतिवचनम्)

'हां मेरा वरण हो चुका', ऐसा ब्राह्मण कहे।

(यथाविहितं कर्म कुरु इति वरणोक्ते)

वर पाधा से ऐसा कहे कि 'जिस प्रकार शास्त्र में लिखा है उसी प्रकार सब कर्म कराओ।'

(करवाणीति ब्राह्मणो वदेत्)

पाधा ऐसा कहे कि 'जिस प्रकार शास्त्र में लिखा है उसी प्रकार सब कर्म कराऊँगा।'

(ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा)

अग्नि से दक्षिण में ब्रह्मा के आसन के लिए एक ढाक का पत्ता धरे।

(कुशाऽभावे सर्वत्र कार्ये दूर्वा ग्राह्या लोकाचारयोपि)

(तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य्य)

उस पत्ते के ऊपर कुशा धरे पूर्व को मुंह करके।

(ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणक्रमेणानीय अत्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय कल्पितासने समुपवेशयेत्)

५० कुशाओं का ब्रह्मा बनावे, उस ब्रह्मा को अग्नि की परिक्रमा करा उसे पत्ते की कुशा के ऊपर उत्तर को मुंह करके उस आसन पर रख दे।

(ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्)

एक सकोरे में जल भरे, फिर उस सकोरे को कुशाओं से ढक कर ब्रह्मा की तरफ देखकर फिर अग्नि से उत्तर की तरफ १ कुशा धरकर उसके ऊपर सकोरा धरे।

(ततः परिस्तरणम्) वेदी के चारों ओर कुशा धरे।

(बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय)

६४ कुशा में से सोलह कुशा लेकर इस प्रकार धरे।

(आग्नेयादीशानान्तम्)

अग्नि से ईशान दिशा तक चार कुशा धरे।

(ब्रह्माणोऽग्निपर्यन्तम्)

ब्रह्मा से अग्नि तक चार कुशा धरे।

(नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्)

नैर्ऋत्य से वायव्य दिशा तक चार कुशा धरे।

(अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्)

अग्नि से प्रणीता पात्र तक चार कुशा धरे।

(ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रछेदनार्थं कुशत्रयम्)

अग्नि से उत्तर की ओर पश्चिम दिशा में तीन कुशा पवित्र छेदन के लिए धरे।

(पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भकुशपत्रद्वयम्)

तीन कुशा के बीच की कुशा निकालकर दो पत्रों वाली कुशा वेदी से उत्तर में पवित्री बनाने के लिए धरे।

(प्रोक्षणीपात्रम्)

एक सकोरा उत्तर में प्रोक्षणी पात्र के लिए धरे।

(आज्यस्थालीसम्मार्जनार्थं कुशत्रयम्)

एक घी का पात्र और ३ कुशाएं वेदी के उत्तर में मार्जन के लिए धरे।

(उपयमनार्थं वेणीरूपकुशत्रयम्)

उपयमन के लिए तीन कुशा बटकर उत्तर में रक्खे।

(प्रादेशमात्रं समिधस्तिस्त्रः)

अंगूठे से उसके पास की अंगुली के बराबर तीन लकड़ी उत्तर में धरे।

(स्त्रुवः आज्यम्) उत्तर में स्त्रुवा और घी धरे।

(षट्पंचाशदुत्तरवरमुष्टिशतद्वयावच्छिन्नतण्डुल पूर्णपात्रम्)

एक पात्र में वर दो सौ छप्पन मुट्ठी चावल भरकर या यथाशक्ति लोटे में भर कर पूर्णपात्र उत्तर में धरे।

(पवित्रच्छेदनकुशानां पूर्वं पूर्व दिशिक्रमेणासादनीयम्)

पवित्र छेदन कुशाओं से पूर्व पूर्वदिशा में सब वस्तु रखता जाय।

(अथ तस्यामेव दिशि असाधारणवस्तून्युपकल्पनीयानि तत्र शमीपलाश मिश्राः लाजाः)

उसी दिशा में और भी वस्तुएं ढाक या आम की या शमी की लकड़ी धरे और लाजा (खील) धरे।

(दुषदुपलं कुमारी भ्राता सूर्पः दृढ़पुरुषः। अन्यदपि तदुपयुक्तमालेपनादि द्रव्यम्)

दृषदुपल नाम का एक पत्थर का बाट, कन्या का भाई, बिना तांत का छाज, दृढ़ पुरुष और भी लेपनादि वस्तु धरे।

(ततः पवित्रच्छेदनकुशैः पवित्रे छित्वा प्रादेशमितं पवित्र करणम्)

पवित्र छेदन कुशाओं से पवित्रा छेदन करके एक बालिश्त लम्बा पवित्रा बनावे पवित्र करने के लिए।

(ततः सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिःपोक्षिणीपात्रे निधाय)

पवित्री सहित हाथ करके प्रणीता का जल तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डाले।

(अनामिकांगुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा)

पाथा अनामिका, कनकी अंगुली के पास की अंगुली और अंगूठे में पवित्रा ले।

(त्रिरुत्पवनम्) अनामिका और अंगूठे से प्रणीता के जल को तीन बार उछाले।

(प्रणीतोदकेन त्रिःप्रोक्षणीप्रोक्षणम्)

प्रणीता का जो जल है उसे प्रोक्षणी पात्र में तीन बार करे।

(ततः प्रोक्षणीजलेन यथासादितवस्तुसिंचनम्)

पवित्री से प्रोक्षणी पात्र के जल का सब चीजों पर छींट लगावे।

(ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं निधाय)

अग्नि और प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र रख दे।

(आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः)

घी के कटोरे में घी रक्खे और उसमें यह देखले कि कोई अशुद्ध वस्तु न पड़ी हो।

(ततोऽधिश्रयणम्) घी का कटोरा अग्नि पर रक्खे।

(ततोज्वलतृणादिना हविर्विष्टयित्वा प्रदक्षिणा क्रमेण वह्नौ तत्प्रक्षेपः)

एक कुशा को जलाकर वेदी और घृत के चारों ओर दाहिनी ओर को फिराकर अग्नि में डाल दे।

(पर्यग्निकरणम्) अग्नि को चेतन करदे।

(ततः स्त्रुवप्रतपनम् कृत्वा) स्त्रुवे को अग्नि पर तपावे।

(सम्मार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः)

सम्मार्जन कुशाओं को लेकर अग्रभाग से स्त्रुवे के आदि, मध्य और अन्त में लगावे।

(स्त्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य)

प्रणीता से जल का स्त्रुवे पर छींटा दे।

(पुनः प्रतप्य स्त्रुवं दक्षिणतो निदध्यात्)

फिर स्त्रुवे को तपाकर कुशा के ऊपर दक्षिण में धरे।

(ततः आज्यस्याग्नेरवतारणम्)

घी के पात्र को अग्नि से उतार ले।

(ततः आज्यस्य प्रोक्षणीवदुत्पवनम्)

फिर तीन बार घी को ऊपर उछाले।

(अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनम्)

घृत में देखले कि कोई अशुद्ध वस्तु तो नहीं पड़ी है। पड़ी हो तो निकाल दे।

(पुनः पूर्ववत्प्रोक्षण्युत्पवनम्)

फिर घी को तीन बार ऊपर को उछाले।

(ततः उपयमनकुशान्वामहस्तेनादाय)

उपयमन जो कुशा है उसको बायें हाथ में उठाले।

(उत्तिष्ठन् प्रजापति मनसा ध्यात्वा)

फिर पाधा उठकर प्रजापति भगवान् का ध्यान करे।

(तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्त्रः क्षिपेत्)

पाधा चुपचाप मौन होकर तीन लकड़ी घी में भिगोकर अग्नि में छोड़ दे।

(ततः उपविश्य सपवित्रः)

पवित्रा हाथ में लिए हुए कर्म कर्त्ता बैठ जाय।

(प्रोक्षण्युदकेन प्रदक्षिणक्रमेणाग्निपर्युक्षणं कृत्वा)

पवित्री से प्रोक्षणी के जल का छींटा अग्नि के चारों तरफ लगावे।

(प्रणीतापात्रे निधाय) प्रणीता में पवित्रा धरे।

(पातितदक्षिणजानुः) सीधा घोंटा निवावे।

(कुशेन ब्रह्मणान्वारब्धः)

अपने सीधे घुटने से ब्रह्मा तक कुशा मिलाले।

(समिद्धतमेऽग्नौ स्त्रुवेण)

सीधे हाथ में स्त्रुवे को लेकर प्रचण्ड अग्नि में घी डाले।

(आज्याहुतिर्जुहोति तत्राधारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्यनन्तरं स्त्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः)

अब पाधा स्वाहा करावे और आहुति के बाद स्त्रुवे का कुछ घी प्रोक्षणीपात्र में भी डालता जावे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा–इदं प्रजापतये.।

(इतिमनसा) ये आहुति मन से देवे।

ॐ इन्द्राय स्वाहा–इदमिन्द्राय.।

(इत्याधारौ) इन आहुतियों का नाम ही आधार है।

ॐ अग्नये स्वाहा—इदमग्नये.।

ॐ सोमाय स्वाहा—इदं सोमाय.।

(इत्याज्य भागौ) ये दो आज्यनाम आहुति हैं।

ॐ भूः स्वाहा-इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा-इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा-इदं सूर्याय न मम।

(एतामहाव्याहृतयः) ये तीन महाव्याहृति आहुति हैं।

ओं त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवधासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वन्हितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्य-स्मत्स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्याम् न मम।।१।। ओं सत्वन्नो अग्ने वमोभवोतीनेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्वनो व्वरुणꣳरराणो व्वीहि मृडीकꣳसुहवो न एधि स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम ।।२।। ओं अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपा (वा) श्चसत्य मित्वमयाऽसि। अयानो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳस्वाहा।। इदमग्नये. ।।३।। ओं ये ते शतम्वरुणाये सहस्रम्यज्ञियाः पाशा वितता

महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदम्वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः-इदन्नमम ॥४॥ ओं उदुत्तमम्वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ँ श्रथाय। अथा व्वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणाय. ॥५॥

(एताः सर्व प्रायश्चित्तसंज्ञका)

यह सर्वप्रायश्चित्त आहुति हैं। अब प्रोक्षणीपात्र में घी न डाले।

(ततोऽन्वारब्धं विना)

घुटने से ब्रह्मा तक मिली हुई कुशा हटा कर।

ॐ प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतयेः।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा-इदमग्नये स्विष्टकृते.। (उदकोपस्पर्शनम्)

यह दो आहुति देकर, जल के हाथ लगावे।

(अथ राष्ट्रभृत्)

ॐ ऋताषाड् ऋतधामाऽग्निर्गन्धर्वः। स नऽइदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा व्वाट्॥ इदमृतासाहे ऋतधाम्नेऽग्नये गन्धर्वाय.॥ ॐ ऋताषाड् ऋतधामाऽग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयो-ऽप्सरसो मुदो नाम। ताभ्यः स्वाहा॥ इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्योमुद्भ्यश्च.॥ ॐ स

ॐ हितो विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वः। स नऽइदम्ब्रह्म क्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा व्वाट्। इदथ्ठंसोथ्ठं हिताय विश्वसाम्ने सूर्य्याय गन्धर्वाय.॥ ॐ स ॐ हितो विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम। ताभ्यः स्वाहा॥ इदं मरीचिभ्यो-ऽप्सरोभ्य आयुभ्यो न मम॥ ॐ सुषुम्णः सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्व्वः। स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट्॥ इदं सुषुम्णाय सूर्य्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय.॥ ओं सुषुम्णः सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्व्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम। ताभ्यः स्वाहा॥ इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकु-रिभ्यः न मम ॥ ॐ इषिरो व्विश्वव्यचा व्वातो गन्धर्वः। स न ऽइदम् ब्रह्म क्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा व्वाट्॥ इदमिषिराय व्विश्व-व्यचसे वाताय गन्धर्वाय.॥ ॐ इषिरो व्विश्वव्यचाव्वातो गन्धर्व्वस्तस्यापो ऽप्सरस ऊर्ज्जोनाम। ताभ्यः स्वाहा॥ इदमद्भ्यो-ऽप्सरोभ्य ऊग्भ्र्यः.॥ ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्व्वः। स न इदम् ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै

स्वाहा व्वाट्॥ इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्व्वाय.॥ ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तावा नाम। ताभ्यः स्वाहा॥ इदम् दक्षिणाभ्यो ऽप्सरोभ्य-स्तावाभ्योः ॥ ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः। स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट्॥ इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय.॥ ॐ प्रजापतिर्व्विकर्म्मा मनो गन्धर्व्वस्तस्य ऽऋक् सामान्यप्सरस एष्टयो नाम। ताभ्यः स्वाहा॥ इदं ऋक्सामेभ्योऽप्स-रोभ्यः एष्टिभ्यो न मम ॥ (इति राष्ट्रभृतः) यह राष्ट्रभृत् आहुति हैं।

•(अथ जयाहोमः)

ओं चित्तञ्च स्वाहा॥ इदं चित्ताय. ॥१॥
ओं चित्तिश्च स्वाहा॥ इदं चित्त्यै. ॥२॥
ओं आकूतं च स्वाहा॥ इदमाकूताय. ॥३॥
ओं आकूतिश्च स्वाहा॥ इदमाकूत्यै. ॥४॥
ओं विज्ञातं च स्वाहा॥ इदम् विज्ञाताय. ॥५॥
ओं विज्ञातिश्च स्वाहा॥ इदम् विज्ञात्यै. ॥६॥
ओं मनश्च स्वाहा॥ इदम् मनसे. ॥७॥

• यह तेरह आहुतियाँ खील की देनी चाहिए।

ओं शक्वरीश्च स्वाहा॥इदं शक्वरीभ्यः. ॥८॥
ओं दर्शश्च स्वाहा॥ इदम् दर्शाय. ॥९॥ ओं
पौर्णमासञ्च स्वाहा॥ इदं पौर्णमासाय.॥१०॥
ओं बृहच्च स्वाहा॥ इदम् बृहते.॥ ॥११॥
ओं रथन्तरञ्च स्वाहा॥ इदं रथन्तराय. ॥१२॥
ओं प्रजापतिर्जयानिन्द्रायवृष्णे प्रायच्छदुग्रः
पृतनाजयेषु। तस्मै विशः समनमन्त सर्वाः स
उग्रः स इहव्यो बभूव स्वाहा ॥१३॥
(इति जया होमः) यह १३ जया आहुति हैं।

(अथ अभ्यातान-होमः)

ओं अग्निर्भूतानामधिपतिः स माऽवत्व-स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्याम् पुरोधायामस्स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा॥ इदमग्नये भूतानामधिपतये न मम ॥१॥ ओं इन्द्रो ज्येष्ठानाधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या-माशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा॥ इदमिन्द्राय ज्येष्ठाना-मधिपतये न मम ॥२॥ ओं यमः पृथिव्या-ऽअधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्

कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा।। इदं यमाय पृथिव्याऽअधिपतये न मम ।।३।।

(अथ प्रणीतोदक स्पर्शः)

प्रणीता के जल का अग्नि में कुशा से छींटा लगावे।

ओं वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स माऽवत्व-स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा।। इदम् वायवे अन्तरिक्षस्याधिपतये न मम ।।४।। ओं सूर्यो दिवोऽधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा-शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा।। इदम् सूर्याय दिवो ऽधिपतये न मम ।।५।। ओं चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधा-यामस्मिन्मकर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा।। इदम् चन्द्रमसेनक्षत्राणामधिपतये न मम ।।६।। ओं बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा-शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देव-हूत्या ॐ स्वाहा।। इदम् बृहस्पतये ब्रह्मणो-ऽधिपतये न मम ।।७।। ओं मित्रः सत्या-

नामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्य-
स्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्
कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा॥ इदम्
मित्राय सत्यानामधिपतये न मम ॥८॥ ओं
वरुणोऽपामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन्
ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधा-
यामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा॥
इदम् वरुणाय अपामधिपतये न मम ॥९॥
ओं समुद्रः स्त्रोत्यानामधिपतिः स माऽवत्व-
स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां
पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ
स्वाहा। इदम् समुद्राय स्त्रोत्यानामधिपतये न
मम ॥१०॥ ओं अन्न ॐ साम्राज्यान्नामधि-
पतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्
कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा॥ इदमन्नाय
साम्राज्यानामधिपतये. ॥११॥ ओं सोम
ऽओषधीनामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्म-
ण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायाम-
स्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा॥ इदम्
सोमाय औषधीनामधिपतये न मम ॥१२॥

ओं सविता प्रसवानामधिपतिः स माऽवत्व-
स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां
पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ
स्वाहा।। इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये न
मम ।।१३।। ओं रुद्रः पशूनामधिपतिः स
माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा
शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां
देवहूत्या ॐ स्वाहा।। इदम् रुद्रायपशूनामधि-
पतये न मम ।।१४।।

(अत्र प्रणीतोदक स्पर्शः)

प्रणीता के जल का अग्नि में छींटा लगावे।

(अथ अभ्यातान होमः)

ओ३म् त्वष्टा रूपाणामधिपतिः स माऽव-
त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा-
शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां
देवहूत्या ॐ स्वाहा।। इदम् त्वष्ट्रे रूपाणाम-
धिपतये न मम ।।१५।। ॐ विष्णुः पर्वता-
नामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्
क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्
कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा।। इदं विष्णवे
पर्वतानामधिपते न मम ।।१६।। ॐ मरुतो

गणानामधिपतयस्ते स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्म-
ण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधाया-
मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा॥
इदम् मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो न मम
॥१७॥ ॐ पितरः पितामहाः परेऽवरे
ततास्ततामहाः इह माऽवन्त्वस्मिन्
ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधा-
यामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ँ स्वाहा॥
इदम् पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्यो-
ऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यो न मम ॥१८॥

इत्यभ्यातानानाम होमः॥

(अत्र प्रणीतोदक स्पर्शः) प्रणीता के जल का छींटा लगावे।

(अथ आज्य होमः)

निम्न मंत्रों से घी की आहुति देवे–

ॐ अग्निरैतु प्रथमो देवताना ँ सोऽस्यै
प्रजां मुञ्चतु मृत्युपाशात्। तदय ँ राजा-
वरुणोऽनुमन्यतां यथेय ँ स्त्रीपौत्रमघं न
रोदात् स्वाहा॥ इदमग्नये न मम ॥१॥ ॐ
इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु
दीर्घमायुः। अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता
पौत्रमानन्दमभि प्रबुध्यतामिय ँ स्वाहा॥
इदमग्नये. ॥२॥ ॐ स्वस्ति नोऽग्ने दिव आ-

पृथिव्या विश्वानि धेह्यऽयथायदत्र। यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्र ऽ स्वाहा।। इदमग्नये. ।।३।। ॐ सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्ये ह्यजरन्नऽआयुः। अपैतु मृत्युरमृतन्नऽआगाद्वै-वस्वतो नोऽअभयं कृणोतु स्वाहा।। इदम् वैवस्वताय न मम ।।४।।

(ततो अन्तःपट)

कन्या, वर दोनों की एक वस्त्र से ओट करके पाधा अग्नि में नीचे लिखे मन्त्र को मन में पढ़कर आहुति छोड़े।

ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपन्थायतेऽअन्यइतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा ऽ रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा।। इदम् मृत्यवे न मम ।।५।।

फिर उस वस्त्र की ओट हटाले।

(अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः) प्रणीता के जल का छींटा लगावे।

(अनेन वाऽयम् होमः) इस रीति से हवन करे।

(अथ लाजाहुतिः) अब खीलों की आहुति दिलवाये।

ततो वधूमग्रतः कृत्वा वधूवरौ प्राङ्मुखौ स्थितौ भवतः लाजा होमं कुर्यात्। •ततो वराञ्जलिपुटोपरि-संलग्नवध्वञ्जलिस्थघृताभिधारित वधूभ्रातृदत्त शमी पलाशमिश्रैर्लाजैर्वधू कर्तृको मन्त्रपाठपूर्वको होमः।।

● कन्या का भाई इस छाज को लेकर अग्नि के ईशान कोण में खड़ा हो। कन्या वर के हाथ में खील देवे। वर अंगुलियों से अग्नि में छोड़े।

कन्या को आगे वर को पीछे कर और मुंह पूर्व की ओर करके वर की अंजलि पर कन्या की अंजलि रख कर कन्या का भाई वर और कन्या दोनों के हाथ में छाज में से खील और जांड के पत्ते और ढाक की लकड़ी घी में भिगो कर दे। वे अग्नि में नीचे लिखे मन्त्र से पहली आहुति दें।

ओं अर्यमणं देवं कन्या अग्निमयक्षत। स नोऽअर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा।। इदम् अर्यम्णे न मम ।।१।।

इसी प्रकार नीचे लिखे मन्त्र से दूसरी आहुति दें।

ओं इयं नार्य्युपब्रूते लाजानावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा।। इदमग्नये न मम ।।२।।

इसी प्रकार नीचे लिखे मंत्र से तीसरी आहुति दें।

ओं इमांल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामिय ँ स्वाहा।। इदमग्नये न मम ।।३।।

(ततो वधू दक्षिणहस्तं सांगुष्ठम् गृह्णाति वरः)

इसके बाद वर, कन्या के सीधे हाथ का अंगूठा अपने सीधे हाथ में थाम आगे लिखा मन्त्र पढ़े।

ओं गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथा सः। भगोऽअर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वा दुर्गार्हपत्याय देवाः ।।४।। ओं अमोऽहमस्मि सा त्व ँ सा त्वमस्यमोऽहम्। सामाहमस्मि ऋक् त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वं ।।५।। ओं तावेहि विवहावहै सह रेतो दधा-

वहै। प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्द्यावहै बहून् ॥६॥ ॐ ते सन्तु जरदष्टाय: संप्रियोरोचिष्णू सुमनस्यमानौ। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ७ शृणुयाम शरदः शतम् ॥७॥

(अथ वधूमग्रेरुत्तरतः प्राङ्मुख पूर्वोपकल्पिते दृषदुपलं दक्षिणपादेनारोहयति वरः)

कन्या आगे होकर उत्तर में जो पाषाण (बाट) रक्खा है अपने सीधे पैर का अंगूठा पूर्व मुख हो उसके लगावे। मन्त्र–

ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्व ७ स्थिराभव। अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः॥

(अथ गाथां गायति)

अब पाधा स्त्रियों के उत्तम पतिव्रतादि यश का गान करे।

ओं सरस्वति प्रेदमय सुभगे वाजिनीवति। यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः ॥१॥ यस्यां भूत ७ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत्। तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणा-मुत्तमं यशः ॥२॥

(ततोऽग्रेवधूः पश्चात् वरः प्रणीता ब्रह्म सहितमग्नि-प्रदक्षिणं कुरुते ततो वरपठनीयो मन्त्रः)

कन्या अगाड़ी वर पिछाड़ी ब्रह्मा तथा प्रणीता सहित अग्नि की इस मन्त्र से परिक्रमा करें–

ॐ तुभ्यमग्ने पर्य्यवहन्त्सूर्या वहतु ना सह। पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह॥

(पठन परिक्रमेत्)

पहली परिक्रमा करावे अर्थात् यह पहला फेरा हुआ।

(ततः पश्चादग्नेः स्थित्वा लाजाहोम। सांगुष्ठहस्तगृहणाश्मारोहण गाथागायनाग्नि प्रदक्षिणानि पुनरपि द्विस्थैव कर्त्तव्या)

इस प्रकार अग्नि के पीछे खड़े होकर लाजाहोम, अंगूठे के साथ हस्तग्रहण, अश्मारोहण, गाथागान और अग्नि की प्रदक्षिणा करे।

(पुनरेवं विधाय)

(एता नव लाजाहुतयः। सांगुष्ठहस्तगृहणत्रयं अश्मारोहणत्रयं। गाथागान त्रयं च समपद्यते)

इसी प्रकार तीन बार नव लाजाहुति, तीन बार हस्तग्रहण, अश्मारोहण तीन बार, गाथागान तीन बार, अग्नि की तीन परिक्रमा करने से पूर्ण कृत्य सम्पन्न होता है। पाधा दूसरी और तीसरी परिक्रमा (फेरा) उपरोक्त विधि से क्रमानुसार सम्पन्न करवावे।

(ततोऽवशिष्टलाजैः कन्याभ्रातृदत्तैरञ्जलिस्थ शूर्पकोणेन वधूर्जुहोति)

बची हुई जो खील हैं कन्या का भाई छाज की कोण से कन्या के हाथों पर गेरे और कन्या अग्नि में उनकी आहुति दे। इस मन्त्र से-

ओं भगाय स्वाहा। इदं भगाय न मम ।।

(अस्थाग्ने वरः पश्चात् वधूस्ततः तूष्णीमेव चतुर्थ परिक्रमणं कुरुतः)

फिर कन्या को पीछे और वर को आगे कर अग्नि की मौन चौथी परिक्रमा (फेरा) करावे। इस प्रकार यह चौथा फेरा हुआ।

(ततो वरश्च कन्या च उपविश्य ब्रह्मणाऽन्वारब्धः)

वर कन्या दोनों अपने-अपने आसन पर बैठ जायें, फिर पाधा कुशा के ब्रह्मा से मिले अर्थात् कुशा अपने घोटे से ब्रह्मा तक मिला लेवे।

(आज्येन प्रजापत्यं जुहुयात्)

फिर पाधा अग्नि में घी की आहुति दे।

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।

इति मनसा।। यह आहुति मन में बोले।

(अत्र प्रोक्षणीपात्रे आहुति-शेषाज्यप्रक्षेपः)

स्रुवे से प्रोक्षणी पात्र में घी का छींटा दे और पाधा निम्न श्लोक पढ़े।

मण्डपं मधुपर्कश्च लाजाहोम परिक्रमा।
यावत्सप्तपदी नैव तावत् कन्या कुमारिका।।

अर्थ—मण्डप छावने से तो घर की शोभा हुई और मधुपर्क खाने से वर के देह की शुद्धि हुई और लाजा जो खील हैं उनके हवन करने से देवता प्रसन्न हुए और परिक्रमा से अग्नि प्रसन्न हुई। जब तक सप्तपदी न हो तब तक कन्या की कुंवारी संज्ञा है। ऐसा शास्त्र का वाक्य है।

अथ सप्तपदी

(ततः आलेपनेनोत्तरोत्तर कृत-सप्तमण्डलेषु सप्तपदाक्रमणं वरः कारयेत्।)

तदन्तर पाधा अग्नि के उत्तर की ओर उत्तरोत्तर सात मण्डल बनाये, फिर वर कन्या दोनों उत्तराभिमुख, वर से कन्या दाहिने खड़े होवें। एक-एक पद के साथ दोनों अपना-अपना सीधा पाँव आगे धरें। पहले वर पीछे कन्या। जिस जगह से सीधा पैर उठाया है और उसी जगह बायां पैर धरते जावें और उत्तर को चलते जावें। इस प्रकार निम्न मन्त्रों से सात पग रखें।

(वर सप्त वाक्यानि)

वर कन्या से कहे कि–

●(तत्र प्रथमे ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वा नयतु।)

हे सखे पत्नी! विष्णु स्वरूप मैं घर के अन्नादि के लिए तेरा एक पद रखवाता हूँ अर्थात् घर में मेरे अन्नादि की मालकिन तुम हो।

(द्वितीये ॐ द्वे ऊर्ज्जे त्रिष्णुस्त्वा नयतु।)

हे सखे पत्नी! दूसरे भी तेरा यश बढ़े (किमर्थं) काहे के अर्थ उर्ज्जे नाम (बलाय) तू बलवती हो, इसलिए तेरा दूसरा पद रखवाता हूँ।

(तृतीये ॐ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु।)

● पाणिग्रहण [illegible] गां निष्ठास्यात्सप्तमे पदे (मनु वाक्यम्)

तीसरे भी तेरा यश बढ़े (किमर्थं) काहे के अर्थ (रायस्पोषाय) और धन की वृद्धि हो। तीसरा पद रखवाता हूँ।

(चतुर्थे ॐ चत्वारिमयोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु।)

चौथे तेरा यश बढ़े (किमर्थं) काहे के अर्थ, (मयोभवाय) सुविद्यारूपी माया का सुख प्राप्त हो। चौथा पद रखवाता हूँ।

(पञ्चमे ॐ पञ्चम पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु।)

पांचवे भी तेरा यश बढ़े (किमर्थं) काहे के अर्थ, (गवादिभ्य:पशुभ्य:) गौ आदि पशुओं को भी सुख प्राप्त हो। पांचवाँ पद रखवाता हूँ।

(षष्ठे ॐ षड् ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु।)

छठे भी तेरा यश बढ़े (किमर्थं) काहे के अर्थ, (षट् ऋतुभ्य:) छहों ऋतुओं में तुझको सुख प्राप्त हो। छठा पद रखवाता हूँ।

(सप्तमे ॐ सखेसप्तपदा भवसामामनुव्रता भवविष्णुस्त्वा नयतु)

सातवें भी तेरा यश बढ़े (किमर्थं) काहे के अर्थ, विष्णु जो भगवान् हैं तुझको सातों पदों को प्राप्त करें, भू: आदि जो सात लोक हैं, उनमें विख्यात हो जैसे–अरुन्धती, जानकी आदि धर्म परिव्रता हैं। सातवाँ पद रखवाता हूँ, तत्पश्चात् वर, कन्या अपने-अपने आसन पर बैठ जावें।

(कन्याया: सप्त वाक्यानि)

यह सात वचन कन्या के हैं–

१. यदि यज्ञं कुर्यात्तस्मिन्मम सम्मतिं गृह्णीयात्।

प्रथम जो यज्ञ करें उसमें मेरी सम्मति लें।

२. यदि दानं कुर्यात्तस्मिन्नपि मम सम्मतिं गृह्णीयात्।

दूसरे जो दान करें उसमें भी मेरी सम्मति लें।

३. अवस्थात्रये मम पालनां कुर्यात्।

तीसरे जो तीन अवस्थायें हैं बाल, युवा और बुढ़ापा, उनमें भी मेरी पालना करें।

४. धनादिगोपने मम सम्मतिं गृह्णीयात्।

चौथे माया आदि कहीं धरें-ढकें, तो उसमें भी मेरी सम्मति लें।

५. गवादि पशुक्रयविक्रये मम सम्मतिं गृह्णीयात्।

पाँचवे, गाय, बैल, घोड़ा आदि जो पशु खरीदें तो उसमें भी मेरी सम्मति लें।

६. वसन्तादि षट्सुऋतुषु मम पालनं कुर्यात्।

छठवे वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर छहों ऋतुओं में मेरी पालना करें।

७. सखी सुगन हास्यं कटुवाक्यम् न वदेत् न कुर्यात्। तदाहं भवतां वामांगे आगच्छामि।

सातवे साथ की सहेलियों में मेरी हंसी न करें और न कठोर वचन कहें तो मैं तुम्हारे बायें अंग आऊँ।

(पुनः चत्वारि वर वाक्यानि)

यह चार वाक्य वर के हैं, सो वर पढ़े।

उद्याने मद्यपाने च पितागृहगमनेन च।
आज्ञा भंगो न कर्त्तव्यं वरवाक्यचतुष्टकम् ॥

अर्थ–उद्यान जो जंगल है अर्थात् 'वन' वहाँ न जायं। दूसरे–मद्य जो शराब है जो मनुष्य पीये हुए हो उसके सामने न जायं। तीसरे–अपने पिता के यहां मेरी आज्ञा बिना न जायं। चौथे-धर्म शास्त्रोचित मेरी आज्ञा भंग न करें तो मैं बायें अंग लूं।

बहुत से विद्वान् इस सप्तपदी को इस प्रकार भी कहते हैं–

(अथ द्वितीय सप्तपदी)

आदौ धर्मधरा कुटुम्बसुखदा मिष्टाप्रियाभाषिणी।
क्रोधालस्यनिवारिका सुखकरा आज्ञानुगावर्तिनी॥
शास्त्रानन्दयवृद्धशासनपरा धर्मानुगा सादरम्।
एते सौम्यगुणा वसन्ति सततं वामेहि सा त्वं भव॥

टीका–(१) प्रथम तो हमारे कुल का जो धर्म है उसे तू धारण करे, तो बाये, अंग आ (२) हमारा जो कुटुम्ब है उसको सुख दे, तो बायें अंग आ (३) मीठे वचन उच्चारण करे और क्रोध, आलस्य का निवारण करे तथा धर्मानुकूल वृद्धजनों के उपदेश को सादर स्वीकार करे, तो बायें अंग आ (४) यश और सुख दे तो बायें अंग आ (५) मेरी आज्ञा का पालन करे तो बायें अंग आ (६)

मेरे जो माता-पिता हैं उनकी टहल करे तो बायें अंग आ (७) मेरी जो बहनें हैं उनसे क्रोध न करे तो बायें अंग आ। ये गुण तेरे अन्दर हों तो बायें अंग आ।

(ततोऽग्नेः पश्चादुपविश्य पुरुषस्कंधे स्थितात्मकुम्भादाम्रपल्लवेनोदकमानीय तेन वरो वधूमभिषिंचति।)

जो ब्राह्मण दृढ़ कलश ले रहा है उसके जल का आम के पत्ते से वर कन्या के ऊपर छींटा लगावे, फिर अपने ऊपर छींटा दे। मन्त्र-

ओं आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।।

(अनेन पुनस्तथैव तस्मादेव कुम्भातथैव जलेन वधूं वरोऽभिषिञ्चति)

फिर उसी प्रकार वरुण कलश से वर कन्या के शरीर पर जल का छींटा लगावे। मन्त्र-

ओं आपोहिष्ठामयोभुवस्ता न ऊर्ज्जेदधातनः। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजैयतेह नः। उशतीरिवमातरः।। तस्मा अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।

(ततः सूर्यमुदीक्षस्वेति वधूं संबोध्य वरो वदेत्)

वर कन्या से सूर्य के दर्शन करने को कहे, तब कन्या सूर्य को देखे, वर नीचे लिखा मन्त्र पढ़े-

ॐ तच्चक्षुर्देवहितम् पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

(अस्तंगते सूर्य्ये ध्रुवमुदीक्षस्व)

रात्रि हो तो वर कन्या से ध्रुव तारे का दर्शन करने को कहे, कन्या तारे को देखे और वर यह मन्त्र पढ़े–

ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्येमयि। मह्यं त्वऽऽदात् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती सञ्जीव शरदः शतम्।।

(अथ वरो वधू दक्षिणांगस्योपरि हस्तं नीत्वा तस्याः हृदयमालभेत्)

वर कन्या के सीधे कन्धे पर अपना सीधा हाथ रख कर कन्या के हृदय से लगावे और यह मंत्र पढ़े–

ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं तेऽअस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्।।

(वधूर्वरस्य वामभागे उपविश्यति)

कन्या को वर की बाईं तरफ बैठा दे, फिर उसी समय वर को दक्षिण तरफ बैठा दे।

(अथ सुवर्णांगुलीयकेन वधूमभिमन्त्रयति वरः)

वर सोने की अंगूठी से कन्या की मांग में रोली भरे। मन्त्र–

ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमा ꣳ समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्त्वा याथास्तं विपरेतन।।

(अथ स्विष्टिकृत होमः) पाधा अग्नि में घी की आहुति दे।

ॐ प्रजापतये स्वाहा।। इदं प्रजापतये न मम।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा॥ इदमग्नये.

(स्रुवावशिष्टाज्यस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः)

स्रुवे से प्रोक्षणी पात्र में घी का छींटा दे।

(वरेणसंस्त्रुव प्राशनम्)

वर उस स्रुवे के घी को मुँह से लगावे। फिर आचमन कर हाथ धोवे।

(ततो वरो पूर्णपात्र दक्षिणां ब्रह्मणे दद्यात्)

वो जो ब्रह्मा बना है उसको वर पूर्णपात्र पर दक्षिणा धर के दे–संकल्प :

ॐ अद्यहेत्यादि मासानां मासोत्तमे मासे अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्माहं कृतैतद्विवाहहोम कर्म्मणि कृताकृता वेक्षणरूपब्रह्मकर्म-कर्तुः प्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्र दानं प्रजापति-दैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।

(दान प्रतिष्ठा संकल्पः)

अद्येत्यादि. पूर्णपात्रदानप्रतिष्ठासांगता-फलप्राप्त्यर्थं इमां दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।

(ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः) ब्रह्मा की गांठ खोल दे।

ॐ सुमित्रिया न आप औषधयः सन्तु इति॥

(वर वध्वोः प्रणीता जलेन पवित्रे गृहीत्वा शिरः संमृज्य)

वर कन्या दोनों के ऊपर प्रणीता के जल का पवित्रे से छींटा दे।

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः॥

(इत्यैशान्यां सपवित्रां सजलांप्रणीतां न्यब्जी कुर्यात्)

प्रणीता पात्र को पवित्रे-सहित ईशान दिशा में औंधा कर दे।

अथ वर्हिहोमः

(ततस्तरण क्रमेण वर्हिरुत्थाप्य आज्येनभिधार्य वक्ष्य-माणमंत्रेण हस्तेनैव जुहुयात्)

वेदी के चारों तरफ की सब कुशा उठाकर अग्नि में डाल दे। मन्त्र-

ॐ देवा गातु विदोगातुं वित्वा गातुमितः। मनसम्पते ऽइमं देवयज्ञ ७ स्वाहा।। व्वातेधाः स्वाहा।। इदं.।। इति वर्हिहोमः।

अथ पूर्णाहुति विधानः

किन्हीं आचार्यों के मत से विवाह में पूर्णाहुति करना वर्जित है जिन का जैसा मत हो वैसा करें।

(ततः उत्थाय वधू दक्षिणहस्तेन स्पृष्टैः स्त्रुवस्थघृतपुष्प-फलैः पूर्णाहुतिं कुर्यात्।)

कन्या को खड़ी करके उसके दाहिने हाथ में स्त्रुवा दे और उस पर घी, सुपारी रखकर नीचे लिखे मन्त्र से अग्नि में पूर्णाहुति करावे।

ॐ मूर्द्धानंदिवोऽअरतिम्पृथिव्यां वैश्वा-नरमृत आजातमग्निम्। कवि ७ साम्राज्य-मतिथिं जनानामासन्नापात्रं जनयन्तु देवाः स्वाहा।। इदमग्नये न मम।।

(पुनः अग्नौ घृतधारां दद्यात्)

उसके ऊपर नीचे लिखे मन्त्र से घी की धार छोड़े।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारं। देवस्त्वा सविता पुनातु

वसोः पवित्रेण शतधारेण। सुप्वाकामधुक्षः स्वाहा।।

(ततः उपविश्य स्रुवेण भस्मानीय दक्षिणऽनामिकाग्रेण)

पाधा स्रुवे पर भस्म लगाकर सीधे हाथ की अनामिका से वर कन्या दोनों के लगावे।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने इति ललाटे। (मांथे से)

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् इति ग्रीवायाम्।।

(गले से)

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं इति दक्षिण बाहुमूले।।

(सीधे कन्धे से)

ॐ तन्नो● ऽस्तु त्र्यायुषम् इति हृदये।।

(छाती से)

(कन्या वरश्च छायापात्रदानम् कुर्यात्)

कन्या वर दोनों छाया पात्र का दान करें, कांसी के पात्र में घी भर कर अपना मुँह देखें। उसमें चाँदी की दक्षिणा डालें या पंचरत्न, फिर संकल्प करें।

अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमेमासे. अमुकगोत्रोऽहममुक शर्म्माहं ममविवाह सांगताफलप्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थं इदं छायापात्रघृतप्रपूरितं कांस्यपात्र-दक्षिणासहितं यथानाम गोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

यह छायापात्र डकौत या व्यास को दे। फिर दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

● जब कन्या के भस्मी लगावे तो तन्नो की जगह तत्ते उच्चारण करे।

अद्याऽमुकगोत्रोऽहममुकनाम शर्म्माहं इदं छायापात्रदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थममुकगोत्राय अमुक ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

(हस्तौ प्रक्षाल्य:) हाथ धो डाले। मंत्र-

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां.।।

(ब्राह्मणो वरः गां ददाति ग्राम्यं राजन्यः अश्वं वैश्यः शूद्रो दक्षिणा यथाशक्ति)। (कर्मकर्तृसंकल्पः)

विवाह कराने की दक्षिणा में ब्राह्मण गाय, क्षत्रिय ग्राम, वैश्य घोड़ा, अन्य जाति सामर्थ्यानुसार दक्षिणा दे, पहले कन्या के पिता से संकल्प करावे।

अद्येत्यादि. अमुक गोत्रः अमुक शर्म्माऽहं आत्मनः पुत्री-विवाहसांगताफलप्राप्त्यर्थं अमुकगोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय इमां दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे।

(ब्राह्मण को दे दे) फिर दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

(वरः कर्मकर्तृसंकल्पं कुर्यात्) वर कर्मकर्त्ता का संकल्प करे।

अद्येहेत्यादि. अमुकगोत्रः अमुकशर्म्माहं मम विवाहसांगताफलप्राप्त्यर्थं श्रीयज्ञपुरुष-नारायणप्रीत्यर्थं स वधूकोऽहममुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।।

(ब्राह्मण को दे दे) फिर दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे।

अमुकगोत्रः अमुकशर्म्माहं मम विवाह.

(वरः कन्योः तिलकं कुर्यात्) पाधा पर कन्या के तिलक करे।

आयुष्कामः यशष्कामः पुत्रकामस्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वेकामाः भवन्तु ते।।

पाधा अपने हाथ में पुष्प चावल लेकर वर कन्या को आशीर्वाद दे और ये मन्त्र पढ़े–

श्रीकृष्णः कुशलं करोतु भवतां धाता प्रजानां सुखम्। निर्विघ्नं गणनायकः प्रतिदिनं भानुः प्रतापोदयम्।। शम्भुस्ते धनधान्य कीर्तिमतुलां दर्गाऽरिनाशं सदा। गंगा ते खलु पापहा निशिदिनं लक्ष्मीस्सदातिष्ठतु।।

पाधा अपने हाथ के फूल व चावल वर को दे, फिर पुण्य क्षेत्र समा वेदी करावे और इसके पश्चात् अग्नि में एक टका गिरवा कर चौरी रखकर तौला उल्टा कर दे। फिर पाधा वर और कन्या के पिता से गणेशजी पर चावल छुड़वावे। मन्त्र–

विसर्जन मन्त्रः

ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठं स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छहुताशन।।

गणेशजी और लक्ष्मीजी हमारे गृह में रहें और देवता अपने–अपने स्थान को जायें। पाधा तिलक करे और सेवल कर दे, फिर वह आगे और कन्या पीछे, छापे के आगे जायें।

इति विवाह पद्धतिः।।

(अथ शय्यादान संकल्पः) अब पलंग का संकल्प करें।

ततः दक्षिणशिर समुत्तरपादांतूलकोषधनादिपुरस्कृतां वस्त्राभरणपात्राद्यलंकृतां खट्वां वरकन्यारोहणपूर्वकां पूर्वदिक्पाश्वैकरक्तसूत्रवद्धां कन्यापिता पत्न्यासह ग्रन्थि-बन्धनं कृत्वा खट्वावद्धरक्तसूत्र जलाक्षत दक्षिणाभिः सहसंकल्पं कुर्यात्।

पलंग का सिरहाना दक्षिण की ओर पांयत उत्तर की ओर करके उसके ऊपर धन, वस्त्र और तीयल, बर्तन छाकादि समीप धर कर (कन्या वर दोनों उत्तर को मुँह करके बैठें) और कन्या का पिता अपनी स्त्री से गठजोड़ा बांध कर पूर्व मुख हो पूर्व की ओर सिरहाने के पावे में कलावा बाँधकर अपने सीधे हाथ में उस कलावे को थाम जल, चावल, पैसा लेकर संकल्प करे।

ॐ अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुक-वासरे अमुकगोत्रोऽहं अमुकशर्म्माहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं आत्मनः कन्या विवाहे श्रीयज्ञपुरुषनारायण प्रीत्यर्थं इमां शय्यांसोपस्करां धनवस्त्राभरणभूषितां धातु-पात्रसहितां विविधसिद्धान्नसहितां प्रजापति देवतां रजत सुवर्णमणि भूषणभूषितां अमुकगोत्राय अमुकप्रवरायामुकनाम्ने वराय विष्णुरूपाय सपत्नीकाय तुभ्यमहं संप्रददे।

वह कलावा और पैसा वर को दे दें।

(वरः स्वस्तीतिप्रतिवचनम्) वह ऐसा कहे।

(दानप्रतिष्ठा संकल्पः कुर्यात्)

अब कम से कम एक रुपया, जल, चावल लेकर संकल्प करे।

कृतैतच्छय्यादान प्रतिष्ठासांगतासिद्ध्यर्थं करस्थ सुवर्णमग्निदैवत अमुकनाम्ने वराय तुभ्यमहंसम्प्रददे।

यह भी वर को ही दे दे। (इति शय्यादान संकल्पः) ॥

अथ चतुर्थीकर्म पूर्व नियम

(वधूवरौ त्रिरात्रं अक्षरालवणाशिनौ, अधः शयानौ निर्मैथुनो स्याताम्।)

वधू वर दोनों विवाह के दिन से तीन दिन, तीन रात्रि पर्यन्त नमक न खावें, पृथ्वी पर बिस्तर बिछाकर सोवें और परस्पर प्रसंग न करें।

(सम्वत्सरं न मिथुनमुपेयातां द्वादशरात्रं षड्रात्रं त्रिरात्रमन्तत इति।)

विवाह के दिन से एक साल तक अथवा बारह रात्रि तक अथवा छः रात्रि तक अथवा तीन रात्रि तक स्त्री प्रसंग न करें।

(संवत्सरादिविकल्पास्तु शक्त्यपेक्षया व्यवस्थिताः आतुर्गणां संवत्सरादित्यागाशक्तोत्रिरात्रपक्षाश्रयोऽपि।)

संवत्सरादि का कथन शक्ति के अनुसार कहा है कि वधू वर प्रबल हों और यदि प्रसंग के लिए संवत्सर अथवा बारह रात्रि अथवा छः रात्रि का त्याग न कर सकें इसलिए त्रिरात्रि के बाद चतुर्थी कर्म होने के पश्चात् पांचवीं रात्रि में प्रसंग करने का विधान है।

प्रमाणम्। चतुर्थी कर्म्मानन्तरं पंचम्यादि रात्रिषु अभिगमन बाध्यम्। आप्रदानाद् भवेत्कन्या प्रदानान्तरं वधूः। पाणिग्रहे तु पत्नी स्याद् भार्य्या चातुर्थ्यकर्म्मनि॥

दान करने से पहले कन्या, दान करने बाद वधू, पाणिग्रहण के बाद पत्नी, चतुर्थी कर्म करने के बाद भार्या की संज्ञा होती है। इसलिए चतुर्थी कर्म के बाद स्त्री संज्ञा होने पर परस्पर प्रसंग करना शास्त्रोक्त विधान है।

अथ चतुर्थीकर्म विधिः

नीचे लिखे अनुसार चतुर्थी कर्म करावे।

(ततश्चतुर्थ्यां अपररात्रौ चतुर्थी कर्म्म तच्च गृहाभ्यन्तर एवं कार्य्यम्)

चौथे दिन की अर्ध रात्रि में चतुर्थी-कर्म करावे और यह कर्म घर के अन्दर ही करना चाहिए।

(ततः उद्वर्तनादि कृत्वा युगकाष्टमुपविश्य स्नात्वा। शुद्धवस्त्रं परिधाय गृहं प्रविश्य वधूवरौ प्राङ्मुखौ भवतः।)

उबटनादि मल कर दोनों पटड़ों पर बैठ कर स्नान करें, शुद्ध वस्त्र पहन कर घर में जा वधू वर दोनों आसन पर पूर्व को मुख कर बैठ जावें।

(आचार्यो नवग्रहादिवेदिकां कृत्वा गणपत्यादिपूजनं कारयेत्।)

पण्डित नवग्रहादिकों की वेदी बनाकर गणेश आदि सब देवताओं का वर वधू से पूजन करावे।

(ततः कुशकण्डिकारम्भः)

फिर पण्डित, क्रम से पूर्व लिखित रीति से कुशकुण्डी करावे।

(कुशकण्डिकानन्तरं अग्रिममन्त्रैः आहुति दद्यात्)

तदन्तर नीचे लिखे मन्त्रों की आहुति दे-

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदम् प्रजापतये.

(इति मनसा)

ओं इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय.॥ (इत्याधारौ)
ओं अग्नये स्वाहा। इदमग्नये.॥
ओं सोमाय स्वाहा। इदम् सोमाय.॥

(इत्याज्यभागौ)

(ततः आज्याहुतिपंचतये स्थालीपाकाहुतौ च प्रत्याहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः)

फिर घी की पाँच आहुतियों में स्थाली पाक (घी, दूध, बूरा, आटा, किशमिश इनको पकाकर) की आहुति दे और प्रत्येक आहुति के बाद स्रुवे में बचे हुए घृत को प्रोक्षणी पात्र में डालते जावें।

(ततो ब्रह्मणान्वारब्धं विना)

ब्रह्मा से मिली हुई कुशा को हटाकर इन आहुतियों को दे।

ॐ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा। इदमग्नये. ॥१॥ ओं वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा। इदं वायवे. ॥२॥ ओं सूर्य्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा। इदम् सूर्याय. ॥३॥ ओं चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा। इदम्

चन्द्रमसे न मम ॥४॥ ओं गन्धर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा। इदं गन्धर्वाय न मम ॥५॥

(ततः स्थालीपाकेन जुहुयात्)

फिर स्थालीपाक हलुवे से नीचे लिखी आहुति दे।

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम ॥

(इति मनसा)

(अन्याहुतिनवके हुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः)

अन्य आहुतियों में स्रुवे में बचे हुए घृत का प्रोक्षणी पात्र में छींटा देता जावे।

(अयं च होमो ब्रह्मणान्वारब्धः कर्तृकः)

इन आहुतियों को ब्रह्मा से उस हटी हुई कुशा को धोटि तक मिला कर देवे।

(ततः आज्यास्थालीपाकाभ्यां स्विष्टकृतहोमः)

फिर घी और स्थालीपाक से स्विष्टकृत होम की आहुति दे।

ओं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ॥

(ततः आज्येन) फिर घी की आहुति दे।

ओं भूः स्वाहा। इदम् इदमग्नये॥

ओं भुवः स्वाहा॥ इदं वायवे ॥

ओं स्वः स्वाहा। इदम् सूर्याय॥ एतामहाव्याहृतयः॥

ओं त्वन्नोऽग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्यां इदन्न मम।। ओं स त्वन्नोऽग्ने वमो भवोती नेदिष्ठोऽस्या-उषसो व्युष्ठौ। अवयक्ष्वनो वरुण ँ रराणो व्वीहिमृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां इदन्न मम।। ओं अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्व-मयाऽसि। अया नो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ँ स्वाहा। इदमग्नये.।। ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदम् वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः.।। ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमद्धयम ँ श्रथाय। अथावयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणाय.।।

(एताः सर्व प्रायश्चित्तसंज्ञकाः)

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये.॥

(इति मनसा) इदं प्राजापत्यम्। ततः संस्रुवप्राशनम् (ततः आचम्य)

फिर वर वधू स्रुवे में लगे घी को अनामिका अंगुली से लगाकर चाटें, फिर आचमन करें इस मन्त्र से–

ओं गंगा विष्णु.॥ (हस्तौ प्रक्षालनम्) फिर हाथ धोवें।

(अथ पूर्णपात्रदानम्) अब पूर्णपात्र का संकल्प करें।

अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमे इत्यादि अस्यां रात्रौ कृतैतच्चतुर्थीहोमकर्मणि कृता-कृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्र प्रजापतिदैवतंऽमुकगोत्रायामुक-शर्म्मणे ब्राह्मणाय दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे।

(इतिपूर्ण पात्रदक्षिणां दद्यात्)

यह पूर्णपात्र और दक्षिणा ब्रह्मा को दें।

(स्वस्तीति प्रतिवचनम्) ब्रह्मा 'स्वस्ति' ऐसा कहे।

(ततोब्रह्मग्रन्थिविमोचः) फिर ब्रह्मा की गांठ खोल दे।

ओं सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु॥

(ततः पवित्राभ्यां शिरसंमार्जनम्)

फिर वरुण के जल का पवित्रे से वर वधू के ऊपर छींटा दे। इस मन्त्र से–

ओं दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु-योऽस्मान् द्वेष्टियं वयंद्विष्म.॥

(ततः ऐशान्यां दिशि प्रणीतापात्रं न्युब्जो कुर्यात्)

फिर ईशान दिशा में प्रणीतापात्र को उल्टा करके रख दे।

(ततस्तरणक्रमेण बहिरुत्थाप्य घृतोक्तं हस्तनैव जुहुयात्)

वेदी के चारों ओर की कुशा घृत में भिगोकर अग्नि में डाल दे।

ओं देवा गातु विदो गातुं वित्वा गातुमितः। मनसस्पते इमं देवयज्ञ ꣸ स्वाहा। वातेधाः स्वाहा॥

(ततः आम्रपल्लवेन जलमानीय मूर्ध्नि वरो वधूमभिषिचेत्)

फिर कलश के जल का आम के पत्ते से वर वधू के ऊपर छींटा दे।

ओं या ते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता तूनर्जारहनी तत एनां करोमि। साजीर्यत्वं मयासह श्रीअमुक देव्या॥

(ततो वधू स्थालीपाक प्राशयति वरम्)

फिर वर वधू को स्थालीपाक हलुवा खिलावे, इस मन्त्र से-

ओं प्राणैस्ते प्राणान् संदधामि। ओं अस्थिभिरस्थोनि संदधामि॥ ओं मांसैस्ते-मांसानि संदधामि। ओं त्वचातेत्वचं संदधामि॥

(ततो वधूहृदय स्पृष्ट्वा वरः पठेत्)

इसके बाद वर वधू के हृदय को स्पर्श कर निम्न मन्त्र पढ़े।

ओं यत्ते सुशीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितं। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्।। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ꣳ शृणुयाम शरदः शतम्.।।

(अथ कङ्कणमोक्षणादीनि युतग्रन्थिविमोकादीनि आचारप्राप्तानि कुर्यात्)

फिर वर वधू के कंकण की गांठ लोकरीति के अनुसार खोल दे।

**कङ्कण मोचयाम्यद्य रक्षांसि न कदाचन।
मयि रक्षां स्थिरां दत्त्वा, स्वस्थानं गच्छ कङ्कण।।**

(ततः उत्थाय वधू दक्षिण हस्तस्पृष्टस्त्रुवेण घृतफलंपुष्पंपूर्णेनस्त्रुवेण पूर्णाहुतिं कुर्यात्) फिर घी फल फूल स्रुवे में रखकर वधू के सीधे हाथ से अग्नि में पूर्णाहुति दिलावे। मन्त्र–

ओं मूर्द्धानं दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानर मृतमाजातमग्निम्। कवि ꣳ सम्राजमतिथिं-जनानामासन्नपात्रं जनयन्तु देवाः स्वाहा। इदमग्नये.।।

(ततः स्त्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिकाग्रेणगृहीत-भस्मना)

फिर स्रुवे से होम की भस्म सीधे हाथ की अंगुली से वर वधू के लगावे।

ओं त्र्यायुषं जमदग्ने, इति ललाटे। (माथे पर)

ओं कश्यपस्य त्र्यायुषमिति, ग्रीवायाम्। (गले से)

ओं यद्देवेषुत्र्यायुषमिति, दक्षिणबाहुमूले। (सीधे कंधे से)

ओं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषमिति, हृदये। (छाती से)

वधू के भस्म लगाते समय 'तन्नो' की जगह 'तन्ते' ऐसा कहे। फिर कर्म कराने वाले आचार्य (पण्डित) को, यथाशक्ति दक्षिणा दे।

● इति चतुर्थी कर्मविधि समाप्तम् ●

श्री रामचन्द्र के विवाह का शाखोच्चार

श्री गणेश मनाय के शाखा करूं बखान।
वर कन्या चिरंजीव हों कृपा करें भगवान।।
जनकपुरी के राव हैं राजा जनक सुजान
कन्या ब्याह रचाय के यह प्रण मन ठान।।
परशुराम के धनुष को जो कोई लेय उठाय।
सीता जी उसको वरें कार्य सुफल हो जाय।।
देश-देश के भूप सुन आये जनक द्वार।
धनुष बाण उठत नहीं सबने मानी हार।।
नारद मुनि आये जभी राजा कीनो प्रश्न।
सीता वर है कौन सा रामचन्द्र हरि विश्न।।
विश्वामित्र लेकर चले लक्ष्मण श्रीभगवान।
सब राजा देखें खड़े धनुष तोड़ दिया तान।।
फूलों की माला गले दीनी सीता डार।
सब राजा घर कूं चले अपने मन में हार।।
पंडित कूं बुलवाय के लग्न लिखौ शुभ वार।
अनुराधा नक्षत्र धर और लिखा परिवार।।
गौरी गायत्री सभी कुलवन्ती सब नार।
मंगल गावें कुशल वधू बरसत रंग अपार।।
घोड़ो सभग मंगाय कर कलंगी पाखर जीन।
हीरे मोतियों का सेहरा मुकट धरौ परवीन।।
चंवर करें सेवल खड़े दशरथ करें सामान।
चली बरात भगवान की फरकन लगे निशान।।
जनकपुरी देखे खड़ी मन में खुशी अपार।
आई बरात भगवान की शोभा अपरम्पार।।
पंडित को बुलवायकर कलश गणेश ले हाथ।
सब राजा मिलने चले जनकराव के साथ।।

राजा दशरथ से मिले जनक प्रीत कर जाय।

दूल्हे की सेवल करी जनवासे बिठलाय॥

लीक चुका राजा चले जनक राव के साथ।

फेरों की त्यारी करी गुरु वशिष्ठ के हाथ॥

सीता श्रीभगवान् को वेदी दिये बिठाय।

वेद पढ़े धुनि लायकर हो रहे जय जयकार॥

गौरी गायत्री सभी कुलवन्ती सब नार।

मृगा नयनी दें सीठने शोभा अपरम्पार॥

कन्या का संकल्प कर राजा जनक सुजान।

गुरु वशिष्ठ बोले जभी कहें स्वस्ति भगवान॥

कन्या विवाह रचाकर दीजो वित्त सामान।

स्वीकार करो सब पंच मिल कृपा करो भगवान॥

॥ इति श्रीरामचन्द्र के विवाह का शाखोच्चार ॥

अथ राधा-कृष्ण के विवाह का शाखोच्चार

प्रथमहि सुमिरन मैं करूं गौरी पुत्र गणेश।

विष्णु व्यापक सूर्य फिर दुर्गा और महेश ॥१॥

पाँच देव को ध्याय के शाखा कहूँ बनाय।

राधाकृष्ण विवाह की सुनियो सब चितलाय ॥२॥

जो सुनके सुख होयगो सब ही के मनमांय।

दुःख मिटे संकट कटे सकल पाप मिट जाय ॥३॥

एक समय वृषभान जी गोपों के सरदार।

वर को ढूंढने भवनसूं निकले शकुन विचार ॥४॥

राधा के लायक गुणी बालक नन्द कुमार।

उनको मिल गये भाग्य से गुणगण के भंडार ॥५॥

जैसी थीं श्री राधिका सुन्दरता की सार।

वैसा ही वर मिल गया कृष्ण रूप भरतार ॥६॥

लग्न लेय पण्डित चल्यो आयो गोकुल गाँव।

नन्दराय जी ने उसे दीन्हा सुन्दर ठांव ॥७॥

विप्र देव राजी हुयो बरसाने फिर आय।
कही सकल बात तुरत हरषे कृष्ण गुणगाय ।।८।।
ब्याह दिवस आयो जभी सजकर चली बरात।
हाथी घोड़ा रथ सज्या मारग नहीं समात ।।९।।
नर नारी देखें सभी मन में अति हरषाय।
सो छवि कृष्ण बरात की हमसे कही न जाय ।।१०।।
सामेला पूजा हुई लग्न समय दिखलाय।
चंवरी मांडी प्रेम से वेदी रुचिर बनाय ।।११।।
फेरा खावें राधिका कृष्णचन्द्र भगवान।
फिर बढ़ार जीमड़ हुयो बण्या बहुत पकवान।।१२।।
लाडू घेवर फीणियां बढ़िया मोतीचूर।
रसगुल्ला चोखा घणा हा रससूं भरपूर ।।१३।।
पूड़ी और कचौरियाँ परसे करें मनवार।
जीमजूंठ राजी हुया सब जानी सरदार ।।१४।।
श्री राधा परणाय के विनय करें वृषभान।
नन्दराय तुम हो बड़े मोहि दास कर मान ।।१५।।
ऐसी विनती कर घणी दीन्हां पान अघाय।
हाथी घोड़ा रथ सभी दीन्हे सजा सजाय ।।१६।।
बहुत दासियां दान दीं गहने वस्त्र सजाय।
वृषभान के दान की गिनती कही न जाय ।।१७।।
होय विदा घर को चले बड़े खुशी नन्दराय।
तब सुन्दर बाजा बज्या ध्वजा फरकती जाय ।।१८।।
शाखा कृष्ण विवाह को जो सुणले चितलाय।
मन का दुःख जाता रहे सकल काम हो जाय ।।१९।।
चिरंजीव हों वर वधू हो आनन्द अधिकाय।
राधा कृष्ण विवाह को जो सुनते मन लाय ।।२०।।

।। इति राधा-कृष्ण विवाह का शाखोच्चार सम्पूर्ण ।।

वृहद् हनुमत् सिद्धि



पवनपुत्र बजरंगबली महावीर जी के भक्त लाखों करोड़ों की संख्या में है। इस पुस्तक में हनुमानजी से सम्बद्ध सभी सामग्री संकलित है। लगभग 900 पृष्ठों की सजिल्द व सचित्र पुस्तक का मूल्य केवल 250/- रुपए।

तात्कालिक भृगु प्रश्नावली

प्रत्येक गृहस्थ के जीवन में उतार-चढ़ाव आते ही रहते हैं जीवन में घटने वाली घटनाओं से सम्बद्ध सैकड़ों चमत्कारी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 पृष्ठों में दिए गए हैं। **मूल्य** 150/-

शकुन, भाग्य और ग्रह पीड़ा निवारण

प्रस्तुत पुस्तक तीन खण्डों में है। प्रथम खण्ड में-यात्रा मांगलिक कार्य, प्रस्थान करते समय के शुभाशुभ शकुनों का फलादेश, दूसरे खण्ड में-राशियों पर आधारित विशेष लक्षण, तीसरे खण्ड में-नव ग्रहों के पीड़ा निवारण स्तोत्र दिए गए हैं। पृष्ठ 500 से अधिक, **मूल्य** 150/-

(सभी पुस्तकों पर डाक व्यय पृथक्)

देहाती पुस्तक भण्डार 4422, नई सड़क (एम. बी. डी. के सामने) दिल्ली-110 006
फोन/फैक्स: 23985175, 23261030